Pariksha Saathi — मध्य प्रदेश सामान्य ज्ञान नोट्स

1 टॉपिक • 11 पाठ • अपडेट 28 अक्टूबर 2026

ये नोट्स एक AI सहायक ने लिखे हैं - वही पाठ जो Pariksha Saathi ऐप में हैं। किसी विषय-विशेषज्ञ ने इनकी समीक्षा नहीं की है। ज़रूरी तथ्य आधिकारिक स्रोत या मानक पाठ्यपुस्तक से मिला लें। कोई गलती दिखे तो बताएँ: parikshasaathi.com/contact/

इन परीक्षाओं के पाठ्यक्रम में शामिल मध्य प्रदेश सामान्य ज्ञान के टॉपिक: MP Police Constable, MPPSC Prelims। हर टॉपिक के अंत में उसके मुफ़्त अभ्यास प्रश्नों का लिंक है; पूरे मॉक टेस्ट Pariksha Saathi ऐप और वेबसाइट पर मुफ़्त हैं।

विषय-सूची

मध्य प्रदेश सामान्य ज्ञान

दोहराव पत्रक

मध्य प्रदेश सामान्य ज्ञान

मध्य प्रदेश सामान्य ज्ञान

परीक्षा क्या पूछती है: MPPSC प्रारंभिक परीक्षा और MP पुलिस कांस्टेबल के प्रश्नपत्रों में राज्य सामान्य ज्ञान से 10 से 20 प्रश्न आते हैं। पसंदीदा विषय हैं: राज्य का गठन, प्राचीन और मध्यकालीन राजवंश तथा उनकी राजधानियाँ और स्मारक, नदियाँ और बाँध, राष्ट्रीय उद्यान, खनिज, राज्य प्रतीक, लोक कलाएँ, साहित्यकार और संस्थानों की अवस्थिति। अधिकतर प्रश्न एक पंक्ति के स्मरण वाले होते हैं, इसलिए हर तथ्य को उसके जिले या नदी के साथ याद करना ही कुंजी है।

प्राचीन और मध्यकालीन इतिहास: रायसेन जिले के भीमबेटका शैलाश्रयों में पाषाण युग के चित्र मिलते हैं। उज्जैन (उज्जयिनी) अवंति महाजनपद की राजधानी था। अशोक ने साँची में महास्तूप बनवाया, और विदिशा के निकट बेसनगर का हेलियोडोरस स्तंभ एक यूनानी राजदूत ने वासुदेव के सम्मान में खड़ा किया था। विदिशा के पास उदयगिरि की गुफाएँ, जिनमें वराह की प्रतिमा है, गुप्त काल की हैं। चंदेलों ने खजुराहो बनवाया, परमार धार से मालवा पर शासन करते थे, जहाँ राजा भोज ने विद्या को संरक्षण दिया और भोजपुर के विशाल भोजेश्वर मंदिर का निर्माण आरंभ किया, और कलचुरि जबलपुर के निकट त्रिपुरी से शासन करते थे। दिलावर खाँ गौरी ने 1401 में मालवा सल्तनत की स्थापना की; होशंगशाह ने राजधानी मांडू स्थानांतरित की, जहाँ गयासुद्दीन खिलजी ने जहाज महल बनवाया और बाज बहादुर तथा रूपमती की कथा अमर हो गई। गढ़ा-कटंगा के गोंड राज्य की रानी दुर्गावती 1564 में अकबर के सेनापति आसफ खाँ से लड़ते हुए वीरगति को प्राप्त हुईं। छत्रसाल ने बुंदेलखंड में अपना राज्य स्थापित किया और पेशवा बाजीराव प्रथम को उसका एक भाग दिया। अहिल्याबाई होलकर ने महेश्वर से शासन किया और रानोजी द्वारा स्थापित सिंधिया ग्वालियर के शासक थे।

1857 और आधुनिक राज्य: रानी लक्ष्मीबाई जून 1858 में ग्वालियर के निकट वीरगति को प्राप्त हुईं और तात्या टोपे को अप्रैल 1859 में शिवपुरी में फाँसी दी गई। गोंड शासक शंकर शाह और रघुनाथ शाह को 1857 में जबलपुर में मृत्युदंड दिया गया, और निमाड़ के टंट्या भील को 1889 में फाँसी दी गई। चंद्रशेखर आजाद का जन्म भाबरा में हुआ, जो अब अलीराजपुर जिले में है, और डॉ. बी. आर. आंबेडकर का जन्म महू में हुआ। मध्य प्रदेश का गठन 1 नवंबर 1956 को मध्य भारत, विंध्य प्रदेश, भोपाल राज्य और पुराने मध्य प्रांत के हिंदी भाषी भागों के विलय से हुआ; रविशंकर शुक्ल प्रथम मुख्यमंत्री बने और भोपाल राजधानी बना। छत्तीसगढ़ 1 नवंबर 2000 को अलग हुआ। 2 से 3 दिसंबर 1984 की भोपाल गैस त्रासदी यूनियन कार्बाइड के संयंत्र से मिथाइल आइसोसाइनेट के रिसाव से हुई थी।

भूगोल: मध्य प्रदेश भारत का हृदय स्थल है, जो उत्तर प्रदेश, छत्तीसगढ़, महाराष्ट्र, गुजरात और राजस्थान को छूता है। कर्क रेखा रतलाम, उज्जैन, भोपाल, विदिशा, सागर, जबलपुर और शहडोल जैसे जिलों से गुजरती है। प्रमुख क्षेत्र हैं: काली रेगुर मिट्टी वाला मालवा पठार, बुंदेलखंड, बघेलखंड (रीवा, सतना, सीधी), निमाड़ तथा विंध्य और सतपुड़ा की पर्वत श्रेणियाँ। पचमढ़ी के निकट धूपगढ़, 1350 मीटर, सबसे ऊँचा शिखर है। नर्मदा अमरकंटक से निकलकर भ्रंश घाटी में पश्चिम की ओर बहती हुई खंभात की खाड़ी में गिरती है; ताप्ती मुलताई से निकलती है और वह भी पश्चिम की ओर बहती है, जबकि सोन अमरकंटक के निकट से निकलकर गंगा में मिलती है। चंबल महू के निकट जानापाव से निकलती है, शिप्रा उज्जैन से होकर गुजरती है, बेतवा ओरछा के पास से बहती है और केन पन्ना से होकर। याद रखने योग्य बाँध: चंबल पर गांधी सागर, नर्मदा पर बरगी, इंदिरा सागर और ओंकारेश्वर, तवा नदी पर तवा, सोन पर बाणसागर। संगमरमर की चट्टानें और धुआँधार जलप्रपात जबलपुर के निकट भेड़ाघाट में हैं।

वन और वन्यजीव: राज्य में देश का सबसे बड़ा वन क्षेत्र है और उसे टाइगर स्टेट का दर्जा मिला है। कान्हा (कठोर भूमि का बारहसिंगा), उमरिया में बांधवगढ़, पेंच (जंगल बुक का क्षेत्र), केन नदी पर पन्ना, पचमढ़ी जैवमंडल आरक्षित क्षेत्र के भीतर सतपुड़ा, शिवपुरी में माधव, सीधी में संजय, भोपाल में वन विहार और श्योपुर में कूनो प्रमुख राष्ट्रीय उद्यान हैं। राष्ट्रीय चंबल अभयारण्य घड़ियाल का संरक्षण करता है। भोपाल की भोज आर्द्रभूमि 2002 में राज्य का पहला रामसर स्थल बनी।

अर्थव्यवस्था: पन्ना भारत का एकमात्र हीरा खनन जिला है, बालाघाट का मलाजखंड एक प्रमुख ताँबा खदान है (हिंदुस्तान कॉपर), बालाघाट से मैंगनीज मिलता है, सिंगरौली से कोयला और बिजली मिलती है, कटनी से बॉक्साइट और चूना पत्थर। राज्य को सोया प्रदेश कहा जाता है, यह दलहन का प्रमुख उत्पादक है और सीहोर के शरबती गेहूँ के लिए प्रसिद्ध है। धार का पीथमपुर वाहन उद्योग का केंद्र है, भोपाल में BHEL है, नेपानगर में NEPA अखबारी कागज कारखाना,

नर्मदापुरम (पूर्व नाम होशंगाबाद) में सिक्योरिटी पेपर मिल, देवास में बैंक नोट प्रेस और जबलपुर में आयुध निर्माणियाँ हैं। चंदेरी (अशोकनगर), महेश्वरी (खरगोन) और बाघ प्रिंट (धार) GI प्राप्त हस्तशिल्प हैं। रीवा में 750 मेगावाट का अल्ट्रा मेगा सोलर पार्क है।

राजव्यवस्था और संस्कृति: विधान सभा में 230 सीटें हैं और विधान परिषद नहीं है; लोक सभा में 29 और राज्य सभा में 11 सदस्य हैं; उच्च न्यायालय जबलपुर में है और इंदौर तथा ग्वालियर में खंडपीठें हैं। मध्य प्रदेश में किसी भी राज्य से अधिक जनजातीय आबादी है, जिसमें भील, गोंड, बैगा, कोरकू और सहरिया शामिल हैं। राज्य प्रतीक: बारहसिंगा, दूधराज (शाह बुलबुल), बरगद और पलाश (पुष्प; कुछ सूचियों में मैडोना लिली)। लोक नृत्यों में बुंदेलखंड के राई और बधाई, मालवा के मटकी और फूलपाती तथा गोंडों और बैगाओं का कर्मा शामिल हैं। तानसेन की स्मृति ग्वालियर से जुड़ी है, अलाउद्दीन खाँ ने मैहर घराने की स्थापना की, लता मंगेशकर का जन्म इंदौर में और किशोर कुमार का खंडवा में हुआ। उत्सव: उज्जैन में सिंहस्थ, उज्जैन में कालिदास समारोह, खजुराहो नृत्य समारोह, भोपाल में लोकरंग और भीलों का भगोरिया हाट। साहित्यकार: माखनलाल चतुर्वेदी (एक भारतीय आत्मा), सुभद्रा कुमारी चौहान और जबलपुर के हरिशंकर परसाई, भवानी प्रसाद मिश्र। राज्य पुरस्कार: संगीत के लिए तानसेन सम्मान, कलाओं के लिए कालिदास सम्मान, कविता के लिए कबीर सम्मान, हिंदी साहित्य के लिए मैथिलीशरण गुप्त सम्मान।

जाल (ट्रैप): भिलाई इस्पात संयंत्र छत्तीसगढ़ में है, मध्य प्रदेश में नहीं। चित्रकूट उत्तर प्रदेश के साथ साझा है। मांडू यूनेस्को स्थल नहीं है; खजुराहो, साँची और भीमबेटका हैं। सोन नर्मदा और ताप्ती की तरह पश्चिम की ओर नहीं बहती। सबसे बड़ा नगर इंदौर राजधानी नहीं है और उससे कर्क रेखा नहीं गुजरती। महाकालेश्वर और ओंकारेश्वर ही राज्य के केवल दो ज्योतिर्लिंग हैं।

उदाहरण

- गठन की तिथि पक्की करें: 1 नवंबर 1956 (राज्य गठन), 1 नवंबर 2000 (छत्तीसगढ़ अलग)। तारीख वही, अंतर 44 वर्ष।
- तीन यूनेस्को विश्व धरोहर स्थल (2026 तक), अक्षर S, K, B: साँची (बौद्ध स्तूप), खजुराहो (चंदेल मंदिर), भीमबेटका (शैलाश्रय)।
- मध्य प्रदेश की पश्चिम-वाहिनी नदियाँ नर्मदा और ताप्ती हैं, दोनों विंध्य और सतपुड़ा के बीच भ्रंश घाटियों में। सोन उसी अमरकंटक से निकलती है पर उत्तर-पूर्व में गंगा की ओर बहती है।
- बाँध और नदी: गांधी सागर = चंबल, बरगी और इंदिरा सागर = नर्मदा, बाणसागर = सोन, तवा = तवा, राजघाट = बेतवा।
- सर्वोच्च शिखर धूपगढ़ (1350 मीटर) सतपुड़ा श्रेणी में पचमढ़ी पर है, मैकल पहाड़ियों के अमरकंटक में नहीं।
- खनिज मानचित्र: पन्ना = हीरा, मलाजखंड (बालाघाट) = ताँबा, बालाघाट = मैंगनीज, सिंगरौली = कोयला, कटनी = बॉक्साइट और चूना पत्थर।
- राजवंशों की राजधानियाँ: परमार = धार, कलचुरि = त्रिपुरी (जबलपुर), चंदेल = खजुराहो क्षेत्र, मालवा सल्तनत = मांडू, होलकर = इंदौर और महेश्वर, सिंधिया = ग्वालियर, बुंदेला = ओरछा।
- 1857 में मृत्यु और स्थान: रानी लक्ष्मीबाई ग्वालियर के निकट (जून 1858), तात्या टोपे को शिवपुरी में फाँसी (अप्रैल 1859), शंकर शाह और रघुनाथ शाह को जबलपुर में मृत्युदंड (1857)।
- जन्मस्थान: लता मंगेशकर = इंदौर, किशोर कुमार = खंडवा, चंद्रशेखर आजाद = भाबरा, डॉ. आंबेडकर = महू, अटल बिहारी वाजपेयी = ग्वालियर, कैलाश सत्यार्थी = विदिशा।
- संख्याएँ: विधान सभा 230, लोक सभा 29, राज्य सभा 11, विधान परिषद नहीं, उच्च न्यायालय जबलपुर में, इंदौर और ग्वालियर में खंडपीठें।
- पुरस्कार: तानसेन सम्मान = शास्त्रीय संगीत, कालिदास सम्मान = कलाएँ, कबीर सम्मान = कविता, मैथिलीशरण गुप्त सम्मान = हिंदी साहित्य।
- जाल की जोड़ी: भिलाई इस्पात संयंत्र छत्तीसगढ़ में है; मध्य प्रदेश के औद्योगिक नाम हैं BHEL भोपाल, पीथमपुर वाहन केंद्र, NEPA नेपानगर और जबलपुर की आयुध निर्माणियाँ।

> **त्वरित दोहराव:** MP गठन 1 नवंबर 1956, प्रथम CM रविशंकर शुक्ल, छत्तीसगढ़ 1 नवंबर 2000 को अलग; विधान सभा 230, लोक सभा 29, राज्य सभा 11, उच्च न्यायालय जबलपुर (खंडपीठ इंदौर, ग्वालियर); नर्मदा अमरकंटक से निकल पश्चिम बहती है, ताप्ती मुलताई से; सर्वोच्च शिखर धूपगढ़ (सतपुड़ा); यूनेस्को: खजुराहो, साँची, भीमबेटका; पन्ना हीरा, मलाजखंड ताँबा, सिंगरौली कोयला; सबसे बड़ा वन क्षेत्र और जनजातीय आबादी (भील सबसे बड़े); राज्य पशु बारहसिंगा, पक्षी दूधराज, वृक्ष बरगद, पुष्प लिली; ज्योतिर्लिंग महाकालेश्वर और ओंकारेश्वर; भोपाल गैस त्रासदी 1984 (मिथाइल आइसोसाइनेट)।

प्राचीन मध्यप्रदेश: भीमबेटका, महाजनपद, मौर्य और गुप्त काल

प्रागैतिहासिक मध्यप्रदेश: राज्य में मानव इतिहास पाषाण युग से आरंभ होता है। रायसेन जिले में भोपाल से लगभग 45 किमी दक्षिण-पूर्व में विंध्य की पहाड़ियों में स्थित भीमबेटका के शैलाश्रयों की पहचान पुरातत्वविद् वी. एस. वाकणकर ने 1957 में की थी। बलुआ पत्थर के सैकड़ों शैलाश्रयों में लाल और सफेद खनिज रंगों से बने चित्र हैं, जिनमें शिकार, नृत्य तथा बाइसन, बाघ और हाथी जैसे पशु दिखाए गए हैं; सबसे पुरानी परतें मध्यपाषाण काल तक जाती हैं। इसका नाम लोक में 'भीम बैठका' अर्थात भीम के बैठने का स्थान माना जाता है, और 2003 में यह यूनेस्को विश्व धरोहर स्थल बना। नर्मदा घाटी में हथनोरा (सीहोर जिला) में भारतीय भूवैज्ञानिक सर्वेक्षण के अरुण सोनकिया ने 1982 में मानव खोपड़ी का एक जीवाश्म खोजा, जिसे 'नर्मदा मानव' कहा जाता है और भारत में मिला सबसे पुराना मानव जीवाश्म माना जाता है। नर्मदापुरम के पास आदमगढ़ में पाषाणकालीन औज़ार और चित्र मिले हैं, तथा ताम्रपाषाणिक कृषक गाँवों का उत्खनन महेश्वर के पास नवदाटोली और उज्जैन के पास कायथा में हुआ है।

अवंति और चेदि: छठी शताब्दी ईसा पूर्व में बौद्ध ग्रंथों में वर्णित सोलह महाजनपदों में से दो वर्तमान मध्यप्रदेश में थे। पश्चिमी मालवा में स्थित अवंति की राजधानी शिप्रा तट पर उज्जयिनी (उज्जैन) थी, और माहिष्मती, जिसकी पहचान प्रायः नर्मदा तट के महेश्वर से की जाती है, इसका दक्षिणी केंद्र थी। इसका राजा चंड प्रद्योत बुद्ध का समकालीन और मगध का प्रतिद्वंद्वी था, और अंततः शिशुनाग वंश के समय अवंति को मगध में मिला लिया गया। चेदि बुंदेलखंड क्षेत्र

में था और उसकी राजधानी शुक्तिमती थी; महाभारत में शिशुपाल चेदि का राजा है। उज्जैन गंगा के मैदान से पश्चिमी बंदरगाहों तक जाने वाले व्यापार मार्ग पर स्थित था, जिससे यह दो हज़ार से अधिक वर्षों तक समृद्ध रहा।

मौर्य काल और मालवा में अशोक: मौर्यों के अधीन उज्जैन पश्चिमी प्रांत अवंति का मुख्यालय था। अशोक अपने पिता बिंदुसार के शासनकाल में उज्जैन का उपराजा (वायसराय) रहा, और श्रीलंकाई इतिवृत्तों के अनुसार उसने विदिशा के एक व्यापारी की पुत्री देवी से विवाह किया, जो महेंद्र और संघमित्रा की माता थीं। राज्य में अशोक के अभिलेखों में रूपनाथ (कटनी जिला), गुर्जरा (दतिया जिला), जो उन गिने-चुने अभिलेखों में है जिनमें राजा का नाम 'अशोक' मिलता है, और सारु-मारु (सीहोर जिला) के लघु शिलालेख, तथा साँची का स्तंभलेख शामिल हैं, जिसमें भिक्षुओं को संघ में फूट डालने के विरुद्ध चेतावनी दी गई है। अशोक ने तीसरी शताब्दी ईसा पूर्व में साँची में ईंटों का पहला स्तूप बनवाया।

शुंग, साँची और विदिशा: लगभग 185 ईसा पूर्व में पुष्यमित्र शुंग द्वारा अंतिम मौर्य राजा बृहद्रथ को हटाने के बाद बेतवा तट पर स्थित विदिशा (प्राचीन बेसनगर) शुंगों का प्रमुख केंद्र बना; उसका पुत्र अग्निमित्र यहीं से शासन करता था और वही कालिदास के नाटक मालविकाग्निमित्रम् का नायक है। शुंग काल में साँची के स्तूप का विस्तार कर उस पर पत्थर का आवरण चढ़ाया गया, और सतना जिले के भरहुत स्तूप की वेदिकाओं पर जातक कथाएँ उकेरी गईं; अलेक्जेंडर कनिंघम ने 1873 में इन्हें खोजा और अब ये कोलकाता के भारतीय संग्रहालय में हैं। दूसरी शताब्दी ईसा पूर्व के उत्तरार्ध में तक्षशिला के हिंद-यवन राजा एंटियालकिडस द्वारा राजा भागभद्र के पास भेजे गए यूनानी राजदूत हेलियोडोरस ने बेसनगर में गरुड़ स्तंभ स्थापित किया, जिस पर वह स्वयं को वासुदेव का भक्त 'भागवत' बताता है; स्थानीय लोग इसे खंभ बाबा कहते हैं।

सातवाहन और शक: दक्कन के सातवाहनों ने पहली शताब्दी ईसा पूर्व में पूर्वी मालवा तक अपनी शक्ति फैलाई। साँची के महास्तूप के चार नक्काशीदार तोरण (प्रवेश द्वार) इसी चरण के हैं: दक्षिणी तोरण के एक अभिलेख में राजा शातकर्णी के शिल्पियों के प्रमुख आनंद के दान का उल्लेख है, और दूसरे अभिलेख के अनुसार इसका एक भाग विदिशा के हाथीदाँत शिल्पियों ने उकेरा। उज्जैन सहित पश्चिमी मालवा पश्चिमी क्षत्रप कहे जाने वाले शक शासकों के हाथ में चला गया; उनमें सबसे महान रुद्रदामन प्रथम उज्जैन से शासन करता था और 150 ई. के अपने जूनागढ़ अभिलेख से जाना जाता है।

गुप्त काल: चंद्रगुप्त द्वितीय (विक्रमादित्य) ने चौथी शताब्दी ईस्वी के अंत के आसपास शक शासन समाप्त किया और उज्जैन को दूसरी राजधानी बनाया। विदिशा के पास उदयगिरि की गुफाएँ, लगभग बीस शैलकृत देवालय, उसी के शासनकाल की हैं: एक में 401 ई. का अभिलेख है और दूसरी में विशाल वराह फलक है, जिसमें विष्णु वराह रूप में पृथ्वी देवी को उठाते दिखाए गए हैं। सागर जिले में बीना नदी के तट पर एरण (प्राचीन ऐरिकिण) में समुद्रगुप्त का एक अभिलेख है, और भानुगुप्त के समय के 510 ई. के एक स्तंभलेख में लिखा है कि उसके सेनापति गोपराज की पत्नी अपने पति की चिता पर सती हो गईं; यह सती प्रथा का सबसे पुराना अभिलेखीय साक्ष्य है। प्रारंभिक गुप्तकालीन मंदिर तिगवा (कटनी जिला), साँची (मंदिर 17), नचना (पन्ना) और भूमरा (सतना) में बचे हैं, और धार जिले की बाघ गुफाओं के चित्रों की तुलना प्रायः अजंता से की जाती है।

कालिदास और उज्जैन: परंपरा कालिदास को राजा विक्रमादित्य के दरबार के नवरत्नों में गिनती है, जिनकी पहचान प्रायः चंद्रगुप्त द्वितीय से की जाती है। उनके मेघदूत में मेघ रूपी दूत उज्जयिनी और महाकाल मंदिर के ऊपर से गुज़रता है, और मालविकाग्निमित्रम् की कथा विदिशा में घटती है; उनकी अन्य रचनाएँ अभिज्ञानशाकुंतलम्, विक्रमोर्वशीयम्, रघुवंश, कुमारसंभव और ऋतुसंहार हैं। 57 ईसा पूर्व से आरंभ होने वाला विक्रम संवत परंपरा से उज्जैन के विक्रमादित्य से जुड़ा है। उज्जैन प्राचीन भारतीय खगोलशास्त्र की शून्य (प्रधान) देशांतर रेखा पर था; बृहत्संहिता और पंचसिद्धांतिका के रचयिता वराहमिहिर ने यहीं कार्य किया, और ब्रह्मगुप्त का नाम यहाँ की वेधशाला से जुड़ा है। उज्जैन में प्रतिवर्ष कालिदास समारोह आयोजित होता है।

उदाहरण

- भीमबेटका (रायसेन जिला): पाषाणकालीन चित्रित शैलाश्रय, जिनकी पहचान वी. एस. वाकणकर ने 1957 में की; 2003 से यूनेस्को विश्व धरोहर स्थल।
- नर्मदा मानव: अरुण सोनकिया को 1982 में सीहोर जिले के हथनोरा में मिला मानव खोपड़ी का जीवाश्म, जिसे भारत में मिला सबसे पुराना मानव जीवाश्म माना जाता है।
- मध्यप्रदेश के महाजनपद: अवंति (राजधानी उज्जयिनी, दक्षिणी केंद्र माहिष्मती) और चेदि (राजधानी शुक्तिमती, बुंदेलखंड); अवंति का राजा चंड प्रद्योत बुद्ध का समकालीन था।
- अशोक उज्जैन का उपराजा रहा और विदिशा की देवी से विवाह किया; उसके अभिलेख रूपनाथ (कटनी), गुर्जरा (दतिया, इसमें 'अशोक' नाम है), सारु-मारु (सीहोर) और साँची स्तंभ पर हैं।
- साँची महास्तूप के तीन चरण: अशोक का ईंटों का स्तूप (मौर्य), पत्थर का आवरण और विस्तार (शुंग), चार नक्काशीदार तोरण (सातवाहन)।
- हेलियोडोरस स्तंभ (खंभ बाबा), विदिशा के पास बेसनगर: दूसरी शताब्दी ईसा पूर्व के उत्तरार्ध में एंटियालकिडस के राजदूत ने स्थापित किया, जिसने स्वयं को वासुदेव का भक्त 'भागवत' कहा।
- भरहुत स्तूप (सतना): जातक कथाओं वाली शुंगकालीन वेदिकाएँ, 1873 में कनिंघम ने खोजीं, अब कोलकाता के भारतीय संग्रहालय में।
- विदिशा के पास उदयगिरि गुफाएँ: चंद्रगुप्त द्वितीय के समय के गुप्तकालीन शैलकृत देवालय, जिनमें वराह फलक और 401 ई. का अभिलेख है।
- एरण (सागर जिला), बीना नदी के तट पर: 510 ई. का स्तंभलेख (भानुगुप्त का समय) सती प्रथा का सबसे पुराना अभिलेखीय प्रमाण है।
- उज्जैन: प्राचीन भारतीय खगोलशास्त्र की शून्य (प्रधान) देशांतर रेखा, वराहमिहिर की कर्मभूमि, कालिदास के मेघदूत का प्रसंग; विक्रम संवत 57 ईसा पूर्व से आरंभ।

त्वरित दोहराव: भीमबेटका (रायसेन) शैलाश्रय, वाकणकर 1957, यूनेस्को 2003; हथनोरा (सीहोर) में नर्मदा मानव खोपड़ी 1982; महाजनपद अवंति (उज्जयिनी, माहिष्मती) और चेदि (शुक्तिमती); अशोक उज्जैन का उपराजा, अभिलेख रूपनाथ, गुर्जरा, सारु-मारु, साँची; विदिशा में शुंग, भरहुत वेदिकाएँ, हेलियोडोरस स्तंभ (दूसरी शताब्दी ईसा पूर्व का उत्तरार्ध); साँची के सातवाहन तोरण; चंद्रगुप्त द्वितीय ने उज्जैन जीता, उदयगिरि वराह फलक (401 ई.); एरण सती अभिलेख 510 ई.; कालिदास, वराहमिहिर और उज्जैन।

मध्यकालीन मध्यप्रदेश: परमार, चंदेल, मालवा के सुल्तान, गोंड और मराठा

क्षेत्रीय राज्य: गुप्तों के बाद मध्य भारत अनेक क्षेत्रीय राजवंशों में बँट गया; नौवीं शताब्दी में ग्वालियर गुर्जर-प्रतिहारों के अधिकार में था, और किले का तेली का मंदिर प्रतिहार युग का माना जाता है। दसवीं शताब्दी से मालवा के परमार, बुंदेलखंड के चंदेल और जबलपुर क्षेत्र के कलचुरि प्रभावी रहे, जब तक तुर्क आक्रमणों ने उन्हें कमज़ोर नहीं कर दिया।

परमार और राजा भोज: परमारों ने मालवा पर पहले उज्जैन से और बाद में धार (धारा नगरी) से शासन किया। कवि-राजा वाक्पति मुंज चालुक्य राजा तैलप द्वितीय के हाथों मारा गया। उसका भतीजा राजा भोज (लगभग 1010-1055) मध्यकालीन मध्यप्रदेश का सबसे प्रसिद्ध शासक है। स्थापत्य पर समरांगण सूत्रधार और काव्यशास्त्र पर सरस्वती कंठाभरण जैसी रचनाओं का श्रेय पाने वाले इस विद्वान राजा ने धार में संस्कृत विद्यालय भोजशाला की स्थापना की, रायसेन जिले के भोजपुर में भोजेश्वर शिव मंदिर का निर्माण आरंभ किया, जो कभी पूरा नहीं हुआ पर जिसमें भारत के सबसे बड़े शिवलिंगों में से एक है, और भोपाल के विशाल तालाब के निर्माण का श्रेय भी उन्हें दिया जाता है; भोपाल नाम प्रायः 'भोजपाल' से निकला माना जाता है। बाद के परमार राजा उदयादित्य ने विदिशा जिले के उदयपुर में उदयेश्वर (नीलकंठेश्वर) मंदिर बनवाया, और 1305 में अलाउद्दीन खिलजी की सेना द्वारा मालवा जीतने के साथ परमार शासन समाप्त हुआ।

चंदेल और खजुराहो: नौवीं शताब्दी में नन्नुक द्वारा स्थापित चंदेलों ने जेजाकभुक्ति (बुंदेलखंड) पर शासन किया; खजुराहो उनका मंदिर-नगर था और कालिंजर तथा महोबा के किले, जो दोनों अब उत्तर प्रदेश में हैं, उनके गढ़ थे। लगभग 950 से 1050 के बीच उन्होंने छतरपुर जिले में बलुआ पत्थर से नागर शैली में खजुराहो के मंदिर बनवाए: यशोवर्मन ने लक्ष्मण मंदिर और धंग ने विश्वनाथ मंदिर बनवाया, और सबसे बड़े कंदरिया महादेव मंदिर का श्रेय विद्याधर को दिया जाता है, जिसने महमूद गजनवी का प्रतिरोध किया। परंपरा 85 मंदिरों की बात करती है, जिनमें से लगभग दो दर्जन बचे हैं। परमर्दिदेव (परमाल) 1182 में पृथ्वीराज चौहान से हारा; उसके सेनापति आल्हा और ऊदल बुंदेली गाथाओं के नायक हैं।

कलचुरि और तोमर: कलचुरि (हैहय) वंश ने जबलपुर के पास आधुनिक तेवर, अर्थात त्रिपुरी, से चेदि देश पर शासन किया; गांगेयदेव ने विक्रमादित्य की उपाधि ली और उसका पुत्र लक्ष्मीकर्ण, जिसने भोज के अंतिम वर्षों में मालवा पर आक्रमण किया, इस वंश का सबसे शक्तिशाली राजा था। भेड़ाघाट का चौंसठ योगिनी मंदिर कलचुरि कृति है। ग्वालियर में कच्छपघात राजा महिपाल ने 1093 में सहस्रबाहु (सास-बहू) मंदिर बनवाया। चौदहवीं शताब्दी के उत्तरार्ध में तोमरों ने ग्वालियर को स्वतंत्र कर लिया। डूंगर सिंह ने किले की चट्टानों में विशाल जैन प्रतिमाएँ उकेरवाईं, और मानसिंह तोमर (1486-1516) ने मान मंदिर महल तथा अपनी गूजर रानी मृगनयनी के लिए गूजरी महल बनवाया। वे ध्रुपद संगीत के महान संरक्षक थे, और 'मान कुतूहल' ग्रंथ उनसे जुड़ा है।

मालवा सल्तनत और मांडू: मालवा के तुगलक सूबेदार दिलावर खाँ गोरी ने 1401 में धार को राजधानी बनाकर स्वतंत्रता घोषित की। उसके पुत्र होशंगशाह (1406-1435) ने राजधानी मांडू स्थानांतरित की, जिसे शादियाबाद, यानी आनंद का नगर, भी कहा जाता है; वहाँ उसका मकबरा भारत की पहली संगमरमर की इमारत माना जाता है, और कहा जाता है कि इसने ताजमहल के निर्माताओं को प्रेरित किया। महमूद खिलजी ने मालवा में खिलजी वंश की स्थापना की और गयासुद्दीन खिलजी ने जहाज महल बनवाया। गुजरात के बहादुरशाह ने 1531 में मालवा को अपने राज्य में मिला लिया। बाद में शेरशाह के सूबेदार शुजात खाँ के पुत्र बाज बहादुर ने मांडू से शासन किया; गायिका रानी रूपमती के प्रति उसका प्रेम रूपमती मंडप में याद किया जाता है। अकबर के सेनापति अधम खाँ ने 1561 में सारंगपुर में बाज बहादुर को हराया, और रूपमती ने बंदी बनने के बजाय विष खा लिया।

गोंड, बुंदेला और मुगल: गढ़ा-कटंगा का गोंड राज्य संग्रामशाह के समय शक्तिशाली हुआ, जिन्हें 52 गढ़ों का श्रेय दिया जाता है। उनके पुत्र दलपतशाह ने चंदेल राजकुमारी दुर्गावती से विवाह किया; पति की मृत्यु के बाद दुर्गावती ने पुत्र वीर नारायण के लिए शासन संभाला, बाज बहादुर को पीछे धकेला, और 24 जून 1564 को जबलपुर के पास अकबर के सेनापति आसफ खाँ से लड़ते हुए प्राण दिए। उत्तर में बुंदेलों ने 1531 में रुद्रप्रताप सिंह के नेतृत्व में बेतवा तट पर ओरछा बसाया। शहज़ादे सलीम (जहाँगीर) के लिए 1602 में अबुल फजल की हत्या करवाने वाले वीरसिंह देव ने ओरछा में जहाँगीर महल और दतिया में महल बनवाया, और रामचंद्रिका तथा रसिकप्रिया के रचयिता हिंदी कवि केशवदास ओरछा दरबार से जुड़े थे। अकबर की अंतिम विजय 1601 में बुरहानपुर के पास असीरगढ़ का किला थी, जिसे दक्कन की कुंजी कहा जाता है, और मुमताज महल की मृत्यु 1631 में बुरहानपुर में हुई। औरंगज़ेब के समय छत्रसाल ने पन्ना को राजधानी बनाकर बुंदेला राज्य खड़ा किया और मुहम्मद खाँ बंगश के आक्रमण पर पेशवा बाजीराव प्रथम से सहायता माँगी, जिन्हें उन्होंने अपने राज्य का एक तिहाई भाग दिया।

मराठा: 1737 में भोपाल के पास निज़ाम पर बाजीराव प्रथम की विजय और 1738 की दुराहा सराय (दोराहा) की संधि से मालवा मराठों को मिला। तीन मराठा घरानों ने इस क्षेत्र के बड़े भाग पर शासन किया: इंदौर में होलकर, ग्वालियर में सिंधिया तथा धार और देवास में पवार, जबकि नागपुर के भोंसलों के पास महाकोशल के कुछ भाग थे। मल्हारराव होलकर ने होलकर राज्य की स्थापना की; उनकी पुत्रवधू अहिल्याबाई होलकर ने 1767 से 1795 तक नर्मदा तट पर महेश्वर से शासन किया, 1780 में काशी विश्वनाथ मंदिर का पुनर्निर्माण कराया, पूरे भारत में मंदिरों और घाटों के लिए दान दिया तथा माहेश्वरी बुनाई को प्रोत्साहन दिया। राणोजी सिंधिया ने उज्जैन को पहली राजधानी बनाकर सिंधिया घराने की नींव रखी, महादजी सिंधिया पानीपत के बाद उत्तर भारत की सबसे बड़ी शक्ति बने, और दौलतराव सिंधिया ने राजधानी ग्वालियर (लश्कर) स्थानांतरित की।

उदाहरण

- राजा भोज (परमार, लगभग 1010-1055): राजधानी धार, भोजशाला, भोजपुर (रायसेन) का भोजेश्वर मंदिर, भोपाल का विशाल तालाब; समरांगण सूत्रधार के रचयिता।
- खजुराहो (छतरपुर): लगभग 950-1050 के नागर शैली के चंदेल मंदिर; लक्ष्मण मंदिर यशोवर्मन ने बनवाया, कंदरिया महादेव का श्रेय विद्याधर को।
- त्रिपुरी (जबलपुर के पास तेवर) के कलचुरि: गांगेयदेव और लक्ष्मीकर्ण; भेड़ाघाट का चौंसठ योगिनी मंदिर।
- ग्वालियर: सास-बहू मंदिर 1093 में कच्छपघात राजा महिपाल ने बनवाया; मानसिंह तोमर (1486-1516) ने मान मंदिर और रानी मृगनयनी के लिए गूजरी महल बनवाया।
- मालवा सल्तनत: दिलावर खाँ गोरी 1401 में धार में स्वतंत्र; होशंगशाह ने राजधानी मांडू (शादियाबाद) की; बाज बहादुर 1561 में सारंगपुर में अधम खाँ से हारा।
- गढ़ा-कटंगा की रानी दुर्गावती 24 जून 1564 को जबलपुर के पास अकबर के सेनापति आसफ खाँ से लड़ते हुए वीरगति को प्राप्त हुईं।
- बेतवा तट पर ओरछा, 1531 में रुद्रप्रताप सिंह द्वारा स्थापित; वीरसिंह देव ने जहाँगीर महल बनवाया; कवि केशवदास ने ओरछा दरबार में रामचंद्रिका लिखी।
- बुरहानपुर के पास असीरगढ़: अकबर की अंतिम विजय (1601), दक्कन की कुंजी; मुमताज महल की मृत्यु 1631 में बुरहानपुर में हुई।
- पन्ना के छत्रसाल ने बंगश के विरुद्ध बाजीराव प्रथम की सहायता ली; दुराहा सराय की संधि (1738) से मालवा मराठों को मिला।
- मराठा घराने: होलकर (इंदौर; अहिल्याबाई ने महेश्वर से 1767-1795 तक शासन किया), सिंधिया (उज्जैन, फिर ग्वालियर), पवार (धार और देवास)।

> **त्वरित दोहराव:** ग्वालियर में प्रतिहार (तेली का मंदिर); धार के परमार, राजा भोज (लगभग 1010-1055), भोजपुर मंदिर, भोजशाला; चंदेलों ने खजुराहो बनवाया (लगभग 950-1050), कंदरिया महादेव; त्रिपुरी के कलचुरि, भेड़ाघाट में चौंसठ योगिनी; सास-बहू मंदिर 1093; मानसिंह तोमर का मान मंदिर और गूजरी महल; मालवा सल्तनत 1401, मांडू, बाज बहादुर और रूपमती, सारंगपुर 1561; दुर्गावती का बलिदान 24 जून 1564; ओरछा की स्थापना 1531; असीरगढ़ 1601; दुराहा सराय की संधि 1738; होलकर, सिंधिया, पवार।

आधुनिक मध्यप्रदेश: ब्रिटिश शासन, 1857 की क्रांति और स्वतंत्रता संग्राम

ब्रिटिश नियंत्रण: तीसरे आंग्ल-मराठा युद्ध ने मध्य भारत को अंग्रेज़ों के अधीन कर दिया। 21 दिसंबर 1817 को महिदपुर (उज्जैन जिला) के युद्ध में होलकर सेना पराजित हुई, और 1818 की मंदसौर की संधि से इंदौर ने ब्रिटिश सर्वोच्चता स्वीकार कर कुछ क्षेत्र छोड़ दिए। मराठों से लिए गए क्षेत्रों को सागर एवं नर्मदा क्षेत्र (सॉगर एंड नर्बदा टेरिटरीज़) के रूप में संगठित किया गया, जिन्हें नागपुर के साथ मिलाकर 1861 में नागपुर राजधानी वाला मध्य प्रांत बना; 1903 में बरार को इसके प्रशासन में जोड़ा गया और 1936 में प्रांत का नाम 'मध्य प्रांत और बरार' हुआ। ग्वालियर, इंदौर, भोपाल, रीवा, धार, देवास, दतिया, ओरछा और पन्ना सहित देशी रियासतों की देखरेख 1854 में बनी सेंट्रल इंडिया एजेंसी करती थी, जिसका गवर्नर-जनरल का एजेंट इंदौर में बैठता था।

मध्यप्रदेश में 1857: क्रांति इस क्षेत्र में 3 जून 1857 को पहुँची, जब नीमच की सेना ने विद्रोह किया। 1 जुलाई 1857 को सआदत खाँ के नेतृत्व में सैनिकों ने इंदौर की ब्रिटिश रेजीडेंसी पर हमला किया, और महू की सेना भी विद्रोह में शामिल हुई। जबलपुर में गोंड राजा शंकरशाह और उनके पुत्र रघुनाथशाह को, जिन्होंने विद्रोह का आह्वान करने वाली कविताएँ लिखी थीं, 18 सितंबर 1857 को तोप के मुँह से बाँधकर उड़ा दिया गया। मंडला क्षेत्र में रामगढ़ की रानी अवंतीबाई लोधी ने अंग्रेज़ों के विरुद्ध सेना खड़ी की और घिर जाने पर 20 मार्च 1858 को आत्मबलिदान दिया; बरगी बाँध का नाम उनके सम्मान में रानी अवंतीबाई लोधी सागर रखा गया है। धार के अमझेरा के राजा बख्तावर सिंह को 1858 में इंदौर में फाँसी दी गई।

झाँसी और ग्वालियर का संबंध: रानी लक्ष्मीबाई की झाँसी अब उत्तर प्रदेश में है, पर उनके अंतिम युद्ध मध्यप्रदेश में लड़े गए। झाँसी और कालपी के पतन के बाद वे तात्या टोपे और राव साहब से मिलीं, और ग्वालियर की सेना की सहायता से उन्होंने 1 जून 1858 को ग्वालियर का किला जीत लिया, जबकि जयाजीराव सिंधिया आगरा भाग गए। 18 जून 1858 को ग्वालियर के पास ह्यूरोज़ की सेना से लड़ते हुए रानी वीरगति को प्राप्त हुईं, और उनकी समाधि ग्वालियर में है। इसके बाद तात्या टोपे ने मध्य भारत में लंबा छापामार अभियान चलाया, जब तक नरवर के मानसिंह ने उनसे विश्वासघात नहीं किया; वे पारोन के जंगल में पकड़े गए और 18 अप्रैल 1859 को शिवपुरी में उन्हें फाँसी दी गई।

जनजातीय प्रतिरोध: निमाड़ और सतपुड़ा के वनों के भीलों और अन्य जनजातियों ने दशकों तक ब्रिटिश शासन का विरोध किया। बड़वानी क्षेत्र के भील नेता भीमा नायक 1857 के दौरान और उसके बाद अंग्रेज़ों से लड़े और उन्हें अंडमान द्वीप भेज दिया गया। 'भारतीय रॉबिन हुड' कहे जाने वाले निमाड़ के टंट्या भील सरकारी खज़ानों और धनी साहूकारों को लूटकर गरीबों में बाँटते थे; विश्वासघात से पकड़े जाने के बाद 1889 में जबलपुर में उन्हें फाँसी दी गई, और उनका स्मारक महू के पास पातालपानी में है।

राष्ट्रीय आंदोलन के सत्याग्रह: झंडा सत्याग्रह 1923 में जबलपुर से आरंभ हुआ, जब अधिकारियों ने टाउन हॉल पर राष्ट्रीय ध्वज फहराने पर आपत्ति की; इसका नेतृत्व पंडित सुंदरलाल ने किया, गिरफ्तार होने वालों में सुभद्राकुमारी चौहान भी थीं, और आंदोलन नागपुर तक फैल गया। 1930 के सविनय अवज्ञा आंदोलन के दौरान सतपुड़ा क्षेत्र के जनजातीय लोगों ने जंगल सत्याग्रह में वन कानून तोड़े: बैतूल के घोड़ाडोंगरी में इसका नेतृत्व गंजन सिंह कोरकू ने किया, और सिवनी जिले के टुरिया में पुलिस की गोलीबारी में कई सत्याग्रही मारे गए। 14 जनवरी 1931 को छतरपुर जिले में उर्मिल नदी के तट पर चरण पादुका में एक शांतिपूर्ण सभा पर ब्रिटिश सेना ने गोलियाँ चलाईं; इस घटना को मध्यप्रदेश का जलियाँवाला बाग कहा जाता है। 1939 में भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस का 52वाँ अधिवेशन जबलपुर के पास त्रिपुरी में हुआ, जहाँ गांधीजी समर्थित प्रत्याशी पट्टाभि सीतारमैया को हराकर पुनः अध्यक्ष बने सुभाषचंद्र बोस को उस संकट का सामना करना पड़ा जिसके कारण उन्होंने त्यागपत्र दिया।

क्रांतिकारी और लेखक: चंद्रशेखर आज़ाद का जन्म 23 जुलाई 1906 को वर्तमान अलीराजपुर जिले के भाबरा गाँव में हुआ, जिसका नाम अब चंद्रशेखर आज़ाद नगर है। हिंदुस्तान सोशलिस्ट रिपब्लिकन एसोसिएशन के नेता आज़ाद 27 फरवरी 1931 को इलाहाबाद के अल्फ्रेड पार्क में पुलिस से लड़ते हुए शहीद हुए। 'एक भारतीय आत्मा' के नाम से प्रसिद्ध माखनलाल चतुर्वेदी ने राष्ट्रवादी साप्ताहिक 'कर्मवीर' का संपादन किया और 'पुष्प की अभिलाषा' लिखी। पंडित

रविशंकर शुक्ल, सेठ गोविंददास, द्वारका प्रसाद मिश्र और पंडित सुंदरलाल ने महाकोशल में कांग्रेस का नेतृत्व किया, और जबलपुर की सुभद्राकुमारी चौहान ने प्रसिद्ध कविता 'झाँसी की रानी' लिखी।

रियासत भोपाल और उसका विलय: दोस्त मोहम्मद खाँ द्वारा स्थापित भोपाल पर 1819 से 1926 तक चार बेगमों ने शासन किया: कुदसिया बेगम, सिकंदर बेगम, शाहजहाँ बेगम और सुल्तान जहाँ बेगम, जिनमें अंतिम 1920 में अलीगढ़ मुस्लिम विश्वविद्यालय की पहली कुलाधिपति बनीं। उनके पुत्र नवाब हमीदुल्ला खाँ ने 1947 के बाद अपनी रियासत को भारतीय संघ में मिलाने का विरोध किया, पर विलीनीकरण आंदोलन के दबाव में 1 जून 1949 को भोपाल भारत का अंग बना और केंद्र ने मुख्य आयुक्त के माध्यम से इसका प्रशासन संभाला; संविधान लागू होने पर 1950 में यह भाग 'ग' राज्य बना।

उदाहरण

- महिदपुर का युद्ध (उज्जैन जिला), 21 दिसंबर 1817: होलकर सेना पराजित; इसके बाद 1818 में मंदसौर की संधि हुई।
- मध्य प्रांत 1861 में नागपुर राजधानी के साथ बना; 1903 में बरार जुड़ा; 1936 में नाम 'मध्य प्रांत और बरार' हुआ; सेंट्रल इंडिया एजेंसी (1854) इंदौर में थी।
- मध्यप्रदेश में 1857 की क्रांति 3 जून 1857 को नीमच से आरंभ हुई; सआदत खाँ ने 1 जुलाई 1857 को इंदौर रेजीडेंसी पर हमला किया।
- गोंड राजा शंकरशाह और उनके पुत्र रघुनाथशाह को 18 सितंबर 1857 को जबलपुर में तोप से उड़ा दिया गया।
- रामगढ़ (मंडला क्षेत्र) की रानी अवंतीबाई लोधी ने 20 मार्च 1858 को आत्मबलिदान दिया; बरगी बाँध उन्हीं के नाम पर है।
- रानी लक्ष्मीबाई 18 जून 1858 को ग्वालियर के पास वीरगति को प्राप्त हुईं; नरवर के मानसिंह के विश्वासघात के बाद तात्या टोपे को 18 अप्रैल 1859 को शिवपुरी में फाँसी दी गई।
- निमाड़ के 'भारतीय रॉबिन हुड' टंट्या भील को 1889 में जबलपुर में फाँसी दी गई; उनका स्मारक महू के पास पातालपानी में है।
- झंडा सत्याग्रह: जबलपुर, 1923, नेतृत्व पंडित सुंदरलाल। जंगल सत्याग्रह, 1930: घोड़ाडोंगरी (बैतूल) में गंजन सिंह कोरकू, टुरिया (सिवनी) में गोलीकांड।
- चरण पादुका (छतरपुर), 14 जनवरी 1931: मध्यप्रदेश का जलियाँवाला बाग। कांग्रेस का त्रिपुरी अधिवेशन (जबलपुर के पास), 1939: अध्यक्ष सुभाषचंद्र बोस।
- चंद्रशेखर आज़ाद का जन्म 23 जुलाई 1906 को भाबरा (अलीराजपुर) में हुआ; भोपाल 1 जून 1949 को भारत में विलीन हुआ।

> **त्वरित दोहराव:** महिदपुर 21 दिसंबर 1817, मंदसौर की संधि 1818; मध्य प्रांत 1861 (नागपुर), बरार 1903 में जुड़ा, सेंट्रल इंडिया एजेंसी इंदौर में; 1857 की क्रांति नीमच में 3 जून से, इंदौर रेजीडेंसी पर हमला 1 जुलाई; शंकरशाह-रघुनाथशाह को 18 सितंबर 1857 को मृत्युदंड; अवंतीबाई का बलिदान 20 मार्च 1858; लक्ष्मीबाई ग्वालियर में 18 जून 1858; तात्या टोपे को शिवपुरी में 18 अप्रैल 1859 को फाँसी; टंट्या भील को 1889 में फाँसी; झंडा सत्याग्रह जबलपुर 1923; जंगल सत्याग्रह 1930; चरण पादुका 1931; त्रिपुरी 1939; आज़ाद का जन्म भाबरा में; भोपाल विलय 1 जून 1949।

मध्यप्रदेश का गठन: 1956 का विलय, विधानमंडल, उच्च न्यायालय और राजकीय प्रतीक

1956 से पहले की चार इकाइयाँ: स्वतंत्रता के बाद वर्तमान राज्य का क्षेत्र चार इकाइयों में बँटा था। पुराना मध्यप्रदेश, एक भाग 'क' राज्य, पूर्ववर्ती मध्य प्रांत और बरार था, जिसकी राजधानी नागपुर थी और पंडित रविशंकर शुक्ल इसके मुख्यमंत्री थे। भाग 'ख' राज्य मध्य भारत 28 मई 1948 को ग्वालियर, इंदौर और मालवा की छोटी रियासतों से बना; जीवाजीराव सिंधिया इसके राजप्रमुख थे और ग्वालियर तथा इंदौर क्रमशः इसकी शीतकालीन और ग्रीष्मकालीन राजधानियाँ थीं। बुंदेलखंड और बघेलखंड की रियासतों से 1948 में बना विंध्य प्रदेश, जिसकी राजधानी रीवा थी, 1950 में भाग 'ग' राज्य बना। 1 जून 1949 को भारत में विलीन भोपाल राज्य भी भाग 'ग' राज्य था, और शंकरदयाल शर्मा 1952 से 1956 तक इसके मुख्यमंत्री रहे।

1956 का पुनर्गठन: फज़ल अली की अध्यक्षता तथा के. एम. पणिक्कर और एच. एन. कुंजरू की सदस्यता वाले 1953 के राज्य पुनर्गठन आयोग ने 1955 में अपना प्रतिवेदन दिया, जिसके बाद राज्य पुनर्गठन अधिनियम, 1956 आया। 1 नवंबर 1956 को मध्य भारत, विंध्य प्रदेश, भोपाल राज्य और पुराने मध्यप्रदेश के हिंदीभाषी महाकोशल जिलों को मिलाकर मध्यप्रदेश बना। नागपुर सहित मराठीभाषी विदर्भ के जिले बंबई राज्य में गए; मंदसौर का सुनेल क्षेत्र राजस्थान को गया, और कोटा का सिरोंज उपखंड मध्यप्रदेश में आया। नया राज्य उस समय क्षेत्रफल में भारत का सबसे बड़ा राज्य था, और 1 नवंबर हर वर्ष मध्यप्रदेश स्थापना दिवस के रूप में मनाया जाता है।

राजधानी और पहले पदाधिकारी: पूर्ववर्ती भोपाल राज्य की राजधानी भोपाल नए राज्य की राजधानी बनी। पहले राज्यपाल डॉ. बी. पट्टाभि सीतारमैया, पहले मुख्यमंत्री पंडित रविशंकर शुक्ल, जिनका निधन 31 दिसंबर 1956 को हुआ, और विधानसभा के पहले अध्यक्ष पंडित कुंजीलाल दुबे थे। बाद में भारत के मुख्य न्यायाधीश और उपराष्ट्रपति बने न्यायमूर्ति एम. हिदायतुल्ला मध्यप्रदेश उच्च न्यायालय के पहले मुख्य न्यायाधीश थे। राज्य सचिवालय (मंत्रालय) भोपाल का वल्लभ भवन है, और विधान भवन का डिज़ाइन वास्तुकार चार्ल्स कोरिया ने बनाया।

छत्तीसगढ़ का पृथक्करण: मध्यप्रदेश पुनर्गठन अधिनियम, 2000 द्वारा 1 नवंबर 2000 को, राज्य गठन के ठीक 44 वर्ष बाद, दक्षिण-पूर्वी जिलों को अलग कर रायपुर राजधानी वाला छत्तीसगढ़ बनाया गया। मध्यप्रदेश ने भिलाई इस्पात संयंत्र, कोरबा का बिजली और एल्युमिनियम केंद्र, बैलाडीला की लौह अयस्क खदानें और बस्तर के अधिकांश वन खो दिए, और यह राजस्थान के बाद क्षेत्रफल में दूसरा सबसे बड़ा राज्य बन गया। 90 सीटें छत्तीसगढ़ में जाने से विधानसभा की सीटें 320 से घटकर 230 रह गईं; लोकसभा सीटें 40 से 29 और राज्यसभा सीटें 16 से 11 हो गईं।

विधानमंडल: मध्यप्रदेश में एकसदनीय विधानमंडल है, अर्थात विधानसभा, जिसके 230 सदस्य पाँच वर्ष के लिए चुने जाते हैं; 2008 के परिसीमन के बाद से 35 सीटें अनुसूचित जातियों और 47 अनुसूचित जनजातियों के लिए आरक्षित हैं। संविधान (सातवाँ संशोधन) अधिनियम, 1956 ने अनुच्छेद 168 में विधान परिषद वाले राज्यों में मध्यप्रदेश को जोड़ा, पर यह प्रावधान राष्ट्रपति द्वारा अधिसूचित तिथि से ही लागू होना था, जो आज तक नहीं हुआ, इसलिए विधान परिषद कभी अस्तित्व में नहीं आई। राज्य लोकसभा में 29 सदस्य भेजता है, जिनमें 4 सीटें अनुसूचित जातियों और 6 अनुसूचित जनजातियों के लिए आरक्षित हैं, तथा राज्यसभा में 11 सदस्य।

न्यायालय और राज्य संस्थाएँ: मध्यप्रदेश उच्च न्यायालय की मुख्य पीठ जबलपुर में है और खंडपीठें इंदौर तथा ग्वालियर में हैं; इसका मूल 1936 के नागपुर उच्च न्यायालय में है। मध्यप्रदेश लोक सेवा आयोग (MPPSC) इंदौर में और राजस्व मंडल ग्वालियर में है, जबकि 1981 के अधिनियम के अंतर्गत गठित लोकायुक्त, राज्य निर्वाचन आयोग और माध्यमिक शिक्षा मंडल भोपाल में हैं। 73वें संविधान संशोधन के बाद राज्य ने 1993 में अपना पंचायत राज अधिनियम पारित किया और 1994 में नई व्यवस्था के अंतर्गत पंचायत चुनाव कराए; इसे प्रायः ऐसा करने वाला पहला राज्य बताया जाता है।

राजकीय प्रतीक: राजकीय पशु बारहसिंगा है, जिसकी कठोर भूमि वाली उप-प्रजाति कान्हा में बची है; राजकीय पक्षी दूधराज (भारतीय पैराडाइज़ फ्लाईकैचर) है, और राजकीय वृक्ष बरगद है। 2011 में महाशीर को राजकीय मछली और 2013 में मलखंब को राजकीय खेल घोषित किया गया, और महेश श्रीवास्तव द्वारा लिखित राज्य गीत 'मेरा मध्यप्रदेश' 2010 में अपनाया गया। ये प्रतीक प्रायः एक-पंक्ति प्रश्नों में, अक्सर सुमेलन (मिलान) के रूप में, पूछे जाते हैं।

उदाहरण

- 1956 से पहले: पुराना मध्यप्रदेश (भाग 'क', राजधानी नागपुर), मध्य भारत (भाग 'ख', ग्वालियर और इंदौर), विंध्य प्रदेश (भाग 'ग', रीवा) और भोपाल (भाग 'ग')।
- मध्य भारत 28 मई 1948 को बना, राजप्रमुख जीवाजीराव सिंधिया; भोपाल 1 जून 1949 को भारत में विलीन हुआ।
- राज्य पुनर्गठन आयोग: फज़ल अली (अध्यक्ष), के. एम. पणिक्कर और एच. एन. कुंजरू; मध्यप्रदेश का गठन 1 नवंबर 1956 को हुआ।
- पहले पदाधिकारी: राज्यपाल पट्टाभि सीतारमैया, मुख्यमंत्री रविशंकर शुक्ल, विधानसभा अध्यक्ष कुंजीलाल दुबे, मुख्य न्यायाधीश एम. हिदायतुल्ला।
- मध्यप्रदेश पुनर्गठन अधिनियम, 2000 के अंतर्गत 1 नवंबर 2000 को छत्तीसगढ़ बना: विधानसभा 320 से 230, लोकसभा 40 से 29, राज्यसभा 16 से 11।
- विधानसभा: 230 सीटें (35 अनुसूचित जाति, 47 अनुसूचित जनजाति); एकसदनीय; सातवें संशोधन, 1956 में विधान परिषद का प्रावधान हुआ पर गठन कभी नहीं हुआ।
- लोकसभा: 29 सीटें (4 अनुसूचित जाति, 6 अनुसूचित जनजाति); राज्यसभा: 11 सीटें।
- स्थान: उच्च न्यायालय जबलपुर (खंडपीठ इंदौर और ग्वालियर), MPPSC इंदौर, राजस्व मंडल ग्वालियर, मंत्रालय वल्लभ भवन, भोपाल।
- राजकीय प्रतीक: पशु बारहसिंगा, पक्षी दूधराज, वृक्ष बरगद, मछली महाशीर (2011), खेल मलखंब (2013), गीत 'मेरा मध्यप्रदेश' (2010)।

> **त्वरित दोहराव:** 1956 से पहले: पुराना मध्यप्रदेश (भाग 'क', नागपुर), मध्य भारत (भाग 'ख', 28 मई 1948), विंध्य प्रदेश (रीवा), भोपाल (विलय 1 जून 1949); फज़ल अली का राज्य पुनर्गठन आयोग; मध्यप्रदेश का गठन 1 नवंबर 1956, राजधानी भोपाल; पहले राज्यपाल पट्टाभि सीतारमैया, मुख्यमंत्री रविशंकर शुक्ल, अध्यक्ष कुंजीलाल दुबे, मुख्य न्यायाधीश हिदायतुल्ला; छत्तीसगढ़ 1 नवंबर 2000 को अलग; विधानसभा 230 (35 अजा, 47 अजजा), एकसदनीय; लोकसभा 29, राज्यसभा 11; उच्च न्यायालय जबलपुर, खंडपीठ इंदौर और ग्वालियर; MPPSC इंदौर; बारहसिंगा, दूधराज, बरगद, महाशीर, मलखंब।

मध्यप्रदेश का भूगोल: स्थिति, सीमाएँ और भौतिक प्रदेश

स्थिति और आकार: मध्यप्रदेश 21°6' से 26°30' उत्तरी अक्षांश और 74°9' से 82°48' पूर्वी देशांतर के बीच भारत के मध्य में स्थित है, इसीलिए इसे भारत का हृदय प्रदेश कहा जाता है। कर्क रेखा (लगभग 23.5 डिग्री उत्तर) राज्य के लगभग बीच से गुज़रती है और रतलाम, उज्जैन, भोपाल, विदिशा, सागर, जबलपुर तथा शहडोल जैसे जिलों को पार करती है। राज्य का क्षेत्रफल 308,252 वर्ग किमी है, जो भारत के क्षेत्रफल का 9.38 प्रतिशत है, और 2000 से यह क्षेत्रफल में राजस्थान के बाद दूसरे स्थान पर है। इसका पूर्व-पश्चिम विस्तार लगभग 870 किमी और उत्तर-दक्षिण विस्तार लगभग 605 किमी है। जनगणना 2011 के अनुसार राज्य की जनसंख्या लगभग 7.26 करोड़ और जनसंख्या घनत्व 236 व्यक्ति प्रति वर्ग किमी है।

पड़ोसी राज्य: राज्य स्थलरुद्ध है और इसकी कोई अंतरराष्ट्रीय सीमा नहीं है। यह पाँच राज्यों से घिरा है: उत्तर-पश्चिम में राजस्थान, उत्तर और उत्तर-पूर्व में उत्तर प्रदेश, दक्षिण-पूर्व में छत्तीसगढ़, दक्षिण में महाराष्ट्र और पश्चिम में गुजरात। इन सीमाओं में सबसे छोटी सीमा गुजरात के साथ है। नदियाँ भी इन सीमाओं के कुछ भाग बनाती हैं: चंबल अपने मार्ग के कुछ हिस्सों में राज्य को राजस्थान और उत्तर प्रदेश से अलग करती है, और नर्मदा महाराष्ट्र के साथ एक छोटी सीमा बनाती है।

धरातल के नीचे की चट्टानें: यहाँ की भू-आकृतियाँ भूगर्भिक संरचना का अनुसरण करती हैं। बुंदेलखंड नीस और ग्रेनाइट सहित सबसे पुरानी आर्कियन चट्टानें उत्तरी पठार बनाती हैं। बालाघाट और छिंदवाड़ा की धारवाड़ चट्टानों में मैंगनीज़ है। विंध्य पर्वत के नाम पर रखा गया बलुआ पत्थर और चूना पत्थर का विंध्य शैल समूह रीवा-पन्ना क्षेत्र में फैला है, जहाँ पन्ना का हीरा क्षेत्र है। सोन, सतपुड़ा और नर्मदा बेसिनों की गोंडवाना चट्टानों में कोयला है, और दक्कन ट्रैप के लावा प्रवाह मालवा तथा पश्चिमी सतपुड़ा को ढकते हैं, जो अपक्षय से काली मिट्टी बनाते हैं। नर्मदा घाटी और चंबल के मैदानों में नदियों की जलोढ़ मिट्टी भरी है।

मालवा और गिर्द क्षेत्र: पश्चिम में मालवा का पठार सबसे बड़ा भौतिक प्रदेश है। दक्कन ट्रैप के बेसाल्ट से बना और काली मिट्टी से ढका यह पठार उत्तर की ओर धीरे-धीरे ढलता है और दक्षिण में नर्मदा के ऊपर विंध्य कगार से घिरा है। चंबल, शिप्रा, काली सिंध, पार्वती और बेतवा इसका जल बहाती हैं, और इंदौर, उज्जैन, देवास, रतलाम, मंदसौर तथा भोपाल इसी पर बसे हैं; चंबल महू के पास जानापाव पहाड़ी से निकलती है। इसकी उर्वरता से पुरानी कहावत बनी: 'मालव धरती गहन गंभीर, डग-डग रोटी पग-पग नीर'। मालवा के उत्तर में मध्य भारत का पठार है, जिसमें ग्वालियर, भिंड और मुरैना का गिर्द क्षेत्र चंबल के बीहड़ों से कटा हुआ है।

बुंदेलखंड, विंध्य और बघेलखंड: उत्तर में बुंदेलखंड का पठार (दतिया, टीकमगढ़, छतरपुर तथा शिवपुरी और सागर के कुछ भाग) ग्रेनाइट और नीस से बना है, जिसमें पथरीली पहाड़ियाँ, पुराने तालाब और उत्तर की ओर यमुना में बहने वाली बेतवा, धसान तथा केन जैसी नदियाँ हैं। विंध्य श्रेणी नर्मदा के उत्तर में एक कगार के रूप में उठती है और पूर्व में भांडेर तथा कैमूर पहाड़ियों के रूप में आगे बढ़ती है; इसके पीछे बलुआ पत्थर और चूना पत्थर का रीवा-पन्ना (विंध्य) पठार है, जिसके किनारे से गिरती नदियाँ जलप्रपात बनाती हैं। सीधी, शहडोल और सिंगरौली के आसपास का पूर्वी पठार बघेलखंड सोन नदी द्वारा अपवाहित है और इसमें गोंडवाना कोयला क्षेत्र हैं।

नर्मदा घाटी और सतपुड़ा-मैकल श्रेणियाँ: नर्मदा घाटी उत्तर में विंध्य और दक्षिण में सतपुड़ा के बीच एक भ्रंश घाटी है, जो जबलपुर, नरसिंहपुर और नर्मदापुरम के आसपास उपजाऊ जलोढ़ से भरी है। सतपुड़ा श्रेणी नर्मदा और ताप्ती के बीच पश्चिम में राजपीपला पहाड़ियों से महादेव पहाड़ियों होते हुए पूर्व में मैकल श्रेणी तक फैली है। 'सतपुड़ा की रानी' पचमढ़ी के पास महादेव पहाड़ियों में स्थित धूपगढ़ (1350 मीटर) राज्य का सबसे ऊँचा स्थान है। मैकल श्रेणी अमरकंटक पठार पर विंध्य से मिलती है, जहाँ से नर्मदा और सोन निकलती हैं। पश्चिम में असीरगढ़ किले द्वारा संरक्षित सतपुड़ा का बुरहानपुर दर्रा उत्तर भारत से दक्कन जाने का पुराना मार्ग था।

बचने योग्य भ्रम: सबसे ऊँची चोटी सतपुड़ा का धूपगढ़ है, मैकल श्रेणी का अमरकंटक नहीं। सबसे बड़ा शहर इंदौर कर्क रेखा के दक्षिण में है, जबकि भोपाल और उज्जैन इसके निकट हैं। विंध्य मुख्यतः एक पठार का किनारा है, वलित पर्वत श्रृंखला नहीं। मालवा की काली मिट्टी दक्कन के लावा से बनी है, जबकि बुंदेलखंड की पतली मिट्टी प्राचीन ग्रेनाइट से।

उदाहरण

- विस्तार: 21°6' उ. से 26°30' उ. और 74°9' पू. से 82°48' पू.; पूर्व-पश्चिम लगभग 870 किमी और उत्तर-दक्षिण लगभग 605 किमी।
- क्षेत्रफल 308,252 वर्ग किमी (भारत का 9.38 प्रतिशत): 2000 से राजस्थान के बाद दूसरा सबसे बड़ा राज्य।
- पाँच पड़ोसी राज्य: राजस्थान, उत्तर प्रदेश, छत्तीसगढ़, महाराष्ट्र और गुजरात; सबसे छोटी सीमा गुजरात से; स्थलरुद्ध राज्य।
- कर्क रेखा रतलाम, उज्जैन, भोपाल, विदिशा, सागर, जबलपुर और शहडोल जैसे जिलों से होकर मध्यप्रदेश के बीच से गुज़रती है; इंदौर इसके दक्षिण में है।
- मालवा का पठार: सबसे बड़ा प्रदेश, दक्कन ट्रैप बेसाल्ट और काली मिट्टी; चंबल महू के पास जानापाव से निकलती है।
- बुंदेलखंड का पठार: सबसे पुरानी चट्टानें (बुंदेलखंड नीस और ग्रेनाइट); बेतवा, धसान और केन उत्तर की ओर यमुना में बहती हैं।
- नर्मदा घाटी उत्तर में विंध्य और दक्षिण में सतपुड़ा के बीच एक भ्रंश घाटी है।
- सबसे ऊँचा स्थान: सतपुड़ा की महादेव पहाड़ियों में धूपगढ़ (1350 मीटर), 'सतपुड़ा की रानी' पचमढ़ी के पास।
- मैकल श्रेणी का अमरकंटक पठार: विंध्य और सतपुड़ा का मिलन स्थल, नर्मदा और सोन का उद्गम।
- जनगणना 2011: जनसंख्या लगभग 7.26 करोड़, घनत्व 236 व्यक्ति प्रति वर्ग किमी।

> **त्वरित दोहराव:** मध्यप्रदेश 21°6'-26°30' उ. और 74°9'-82°48' पू. के बीच, भारत का हृदय प्रदेश, कर्क रेखा बीच से; क्षेत्रफल 308,252 वर्ग किमी (9.38 प्रतिशत), राजस्थान के बाद दूसरा; पाँच पड़ोसी, सबसे छोटी सीमा गुजरात; बुंदेलखंड नीस सबसे पुरानी, विंध्य बलुआ पत्थर, गोंडवाना कोयला, मालवा में दक्कन ट्रैप; प्रदेश: मालवा पठार, गिर्द, बुंदेलखंड, विंध्य पठार, बघेलखंड, नर्मदा भ्रंश घाटी, सतपुड़ा-मैकल; सर्वोच्च स्थान धूपगढ़ 1350 मीटर; अमरकंटक में विंध्य और सतपुड़ा का मिलन।

मध्यप्रदेश की नदियाँ, बाँध और झीलें: नर्मदा, ताप्ती, चंबल, बेतवा, सोन

नदी तंत्र: मध्यप्रदेश से इतनी नदियाँ निकलती हैं कि इसे प्रायः 'नदियों का मायका' कहा जाता है। ये चार तंत्रों से संबंधित हैं। चंबल, सिंध, बेतवा, केन और सोन उत्तर या उत्तर-पूर्व की ओर यमुना और गंगा में बहती हैं; नर्मदा और ताप्ती भ्रंश घाटियों से होकर पश्चिम में अरब सागर में जाती हैं; माही भी पश्चिम की ओर खंभात की खाड़ी में बहती है; और वैनगंगा दक्षिण की ओर गोदावरी में जाती है। प्रायद्वीप की बड़ी नदियों में नर्मदा और ताप्ती इसलिए विशिष्ट हैं कि वे पश्चिम की ओर बहती हैं और डेल्टा के बजाय ज्वारनदमुख (एस्चुअरी) बनाती हैं।

नर्मदा: नर्मदा मैकल श्रेणी में अमरकंटक (अनूपपुर जिला) के नर्मदा कुंड से निकलती है और लगभग 1312 किमी बहती है, जिसमें से लगभग 1077 किमी मध्यप्रदेश में है, फिर गुजरात में प्रवेश कर भरूच के पास खंभात की खाड़ी में मिलती है। पुराणों में रेवा और मध्यप्रदेश की जीवन रेखा कही जाने वाली नर्मदा की तीर्थयात्री पैदल परिक्रमा करते हैं। इसके मार्ग में उद्गम के पास कपिलधारा प्रपात, जबलपुर के पास भेड़ाघाट का धुआँधार प्रपात, जहाँ यह संगमरमर की चट्टानों के बीच गहरी घाटी काटती है, ओंकारेश्वर (मांधाता) द्वीप और महेश्वर के पास सहस्रधारा हैं। इसकी सबसे लंबी सहायक नदी दक्षिण से आने वाली तवा है; अन्य दक्षिणी सहायक नदियों में बुढ़नेर, बंजर, शक्कर और गंजाल हैं, जबकि हिरन, बारना और कोलार उत्तर से मिलती हैं। 1969 में गठित नर्मदा जल विवाद न्यायाधिकरण ने 1979 में अपना निर्णय देकर इसका जल मध्यप्रदेश, गुजरात, महाराष्ट्र और राजस्थान में बाँटा।

नर्मदा पर परियोजनाएँ: जबलपुर के पास बरगी बाँध (रानी अवंतीबाई लोधी सागर) इस नदी पर पूरे हुए पहले बड़े बाँधों में से है। खंडवा जिले के पुनासा में इंदिरा सागर का जलाशय भारत के सबसे बड़े जलाशयों में है और इसका बिजलीघर 1000 मेगावाट का है; नीचे की ओर ओंकारेश्वर परियोजना 520 मेगावाट बिजली बनाती है, और उससे आगे पश्चिम में महेश्वर जलविद्युत परियोजना है। इटारसी के पास तवा नदी पर बना तवा बाँध नर्मदापुरम के मैदान की सिंचाई करता है। गुजरात के सरदार सरोवर बाँध की बिजली का 57 प्रतिशत मध्यप्रदेश को मिलता है। 2014 में नर्मदा-क्षिप्रा लिंक ने नर्मदा का जल उठाकर उज्जैन की नदी शिप्रा में पहुँचाना आरंभ किया; यह राज्य की पहली नदी जोड़ो योजना थी।

ताप्ती, माही और वैनगंगा: ताप्ती (तापी) बैतूल जिले के मुलताई से निकलती है, जिसका नाम 'मूलतापी' अर्थात तापी के उद्गम से बना है। यह सतपुड़ा और अजंता पहाड़ियों के बीच बुरहानपुर, महाराष्ट्र और गुजरात से होकर लगभग 724 किमी पश्चिम की ओर बहती है और सूरत के पास खंभात की खाड़ी में मिलती है; पूर्णा इसकी प्रमुख सहायक नदी है। माही धार जिले के विंध्य क्षेत्र से निकलकर झाबुआ और रतलाम होते हुए राजस्थान और गुजरात जाती है, और कर्क रेखा को दो बार काटने वाली नदी के रूप में जानी जाती है। वैनगंगा सिवनी जिले से निकलकर दक्षिण की ओर बहती है और वर्धा से मिलती है; दोनों की संयुक्त धारा प्राणहिता गोदावरी में मिलती है। पेंच राष्ट्रीय उद्यान को नाम देने वाली पेंच नदी इसी तंत्र की है।

चंबल, बेतवा, केन और सिंध: चंबल (प्राचीन चर्मण्वती) इंदौर जिले में महू के पास जानापाव पहाड़ी से निकलती है और मालवा से होकर उत्तर की ओर बहती है, राजस्थान और उत्तर प्रदेश के साथ सीमा के कुछ भाग बनाती है और उत्तर प्रदेश में यमुना से मिल जाती है; शिप्रा, काली सिंध और पार्वती राज्य में इसकी

सहायक नदियाँ हैं। मंदसौर जिले का गांधी सागर बाँध (1960) राजस्थान के साथ मिलकर बने चंबल घाटी बाँधों में पहला है, जिसके बाद नीचे की ओर राणा प्रताप सागर, जवाहर सागर और कोटा बैराज हैं। बेतवा (वेत्रवती) भोपाल के पास रायसेन जिले से निकलती है, विदिशा और ओरछा से होकर बहती है, उत्तर प्रदेश के साथ संयुक्त परियोजना में राजघाट पर बाँधी गई है, और हमीरपुर में यमुना से मिलती है; बीना, धसान और जामनी इसकी सहायक नदियाँ हैं। केन कैमूर पहाड़ियों से निकलकर पन्ना राष्ट्रीय उद्यान और रनेह प्रपात की ग्रेनाइट घाटी से होकर बहती है और उत्तर प्रदेश के बाँदा जिले में यमुना से मिलती है। सिंध नदी विदिशा जिले से निकलती है। केन-बेतवा लिंक को राष्ट्रीय नदी जोड़ो कार्यक्रम की पहली परियोजना के रूप में नियोजित किया गया।

सोन और पूर्वी नदियाँ: सोन अमरकंटक के पास सोनमुड़ा से निकलती है, शहडोल और सीधी से होकर पहले उत्तर और फिर पूर्व की ओर बहती है, और पटना के पास गंगा से मिलती है; जोहिला, गोपद और रिहंद इसकी सहायक नदियाँ हैं। शहडोल जिले के देवलोंद में सोन पर बना बाणसागर बाँध मध्यप्रदेश, उत्तर प्रदेश और बिहार की संयुक्त परियोजना है। रीवा पठार पर टोंस (तमसा) और उसकी सहायक नदियाँ पठार के किनारे से गिरकर जलप्रपात बनाती हैं, जैसे बीहड़ नदी पर चचाई, महाना पर क्योटी और टोंस पर पुरवा।

भोपाल की झीलें: भोपाल को झीलों का शहर कहा जाता है। ऊपरी झील (बड़ा तालाब या भोजताल) ग्यारहवीं शताब्दी में कोलांस नदी पर मिट्टी के बाँध से बनी और इसका श्रेय राजा भोज को दिया जाता है; यह आज भी शहर के पेयजल का प्रमुख स्रोत है। निचली झील (छोटा तालाब) 1794 में भोपाल के नवाब के मंत्री छोटे खाँ ने बनवाई। दोनों मिलकर भोज वेटलैंड बनाती हैं, जो 2002 में राज्य का पहला रामसर स्थल बना। एक स्थानीय कहावत है: 'ताल तो भोपाल ताल, बाकी सब तलैया'।

उदाहरण

- नर्मदा: अमरकंटक (अनूपपुर) से उद्गम, लगभग 1312 किमी लंबी (मध्यप्रदेश में लगभग 1077 किमी), भ्रंश घाटी से पश्चिम की ओर खंभात की खाड़ी तक; डेल्टा नहीं, ज्वारनदमुख बनाती है।
- नर्मदा पर: उद्गम के पास कपिलधारा, भेड़ाघाट (जबलपुर) में धुआँधार प्रपात और संगमरमर की चट्टानें, ओंकारेश्वर (मांधाता) द्वीप, महेश्वर के पास सहस्रधारा।
- तवा नर्मदा की सबसे लंबी सहायक नदी है; नर्मदा जल विवाद न्यायाधिकरण 1969 में बना और 1979 में निर्णय दिया।
- नर्मदा के बाँध: बरगी (जबलपुर), इंदिरा सागर (पुनासा, खंडवा; 1000 मेगावाट), ओंकारेश्वर (520 मेगावाट), महेश्वर; तवा बाँध तवा नदी पर है।
- ताप्ती मुलताई (बैतूल) से निकलकर सूरत के पास समुद्र में मिलती है; माही कर्क रेखा को दो बार काटती है।
- चंबल जानापाव (महू) से निकलती है; गांधी सागर बाँध (मंदसौर, 1960) राजस्थान के साथ बने चंबल घाटी बाँधों में पहला है।
- बेतवा (वेत्रवती): रायसेन, विदिशा, ओरछा, उत्तर प्रदेश के साथ राजघाट बाँध, हमीरपुर में यमुना से संगम। केन: पन्ना, रनेह प्रपात, बाँदा में यमुना से संगम।
- सोन अमरकंटक के पास सोनमुड़ा से निकलकर गंगा में मिलती है; बाणसागर (देवलोंद, शहडोल) मध्यप्रदेश, उत्तर प्रदेश और बिहार की संयुक्त परियोजना है।
- वैनगंगा सिवनी जिले से निकलकर दक्षिण में गोदावरी तंत्र में जाती है; रीवा के प्रपात: चचाई (बीहड़), क्योटी (महाना), पुरवा (टोंस)।
- भोपाल की झीलें: ऊपरी झील (श्रेय राजा भोज को, कोलांस पर बाँध) और निचली झील (1794); दोनों मिलकर भोज वेटलैंड, 2002 से रामसर स्थल।

> **त्वरित दोहराव:** नर्मदा अमरकंटक से, लगभग 1312 किमी (मध्यप्रदेश में 1077 किमी), भ्रंश घाटी से पश्चिम, भरूच में ज्वारनदमुख; भेड़ाघाट में धुआँधार; सबसे लंबी सहायक तवा; न्यायाधिकरण 1969, निर्णय 1979; बरगी, इंदिरा सागर (1000 मेगावाट), ओंकारेश्वर (520 मेगावाट); सरदार सरोवर की 57 प्रतिशत बिजली मध्यप्रदेश को; नर्मदा-क्षिप्रा लिंक 2014; ताप्ती मुलताई से; माही कर्क रेखा को दो बार काटती है; चंबल जानापाव से, गांधी सागर 1960; बेतवा, केन यमुना में; सोन सोनमुड़ा से, बाणसागर; भोज वेटलैंड रामसर 2002।

मध्यप्रदेश की जलवायु, मिट्टियाँ, वन और वन्यजीव

जलवायु: मध्यप्रदेश की जलवायु उष्णकटिबंधीय मानसूनी है, जिसमें तीन ऋतुएँ हैं: मार्च से मध्य जून तक ग्रीष्म, मध्य जून से सितंबर तक वर्षा और नवंबर से फरवरी तक शीत ऋतु। समुद्र से दूर होने के कारण राज्य की जलवायु महाद्वीपीय प्रकृति की है, जिसमें उत्तर और उत्तर-पश्चिम में बहुत गर्म ग्रीष्म ऋतु होती है, जहाँ ग्वालियर-चंबल क्षेत्र में तापमान 45 डिग्री सेल्सियस से ऊपर जा सकता है, और शीत ऋतु ठंडी होती है। अधिकांश वर्षा दक्षिण-पश्चिम मानसून से, मुख्यतः दक्षिण-पूर्व से प्रवेश करने वाली इसकी बंगाल की खाड़ी शाखा से होती है। इसलिए वर्षा दक्षिण-पूर्व से उत्तर-पश्चिम की ओर घटती है: सतपुड़ा में पचमढ़ी में सबसे अधिक और भिंड-मुरैना-ग्वालियर क्षेत्र में सबसे कम वर्षा होती है। पश्चिमी विक्षोभ शीत ऋतु में हल्की वर्षा (मावठा) लाते हैं, जो रबी फसल के लिए लाभदायक है।

मिट्टियाँ: काली मिट्टी (रेगुर) मालवा पठार, नर्मदा घाटी और सतपुड़ा के कुछ भागों में फैली है। दक्कन ट्रैप बेसाल्ट से बनी यह मिट्टी चिकनी होती है, नमी रोकती है, गीली होने पर फूलती और सूखने पर फटती है, चूना, लोहा, मैग्नीशियम और पोटाश से समृद्ध पर नाइट्रोजन, फॉस्फोरस और जैव पदार्थ में कम होती है, और सोयाबीन, कपास, गेहूँ तथा चने के लिए उपयुक्त है। लाल और पीली मिट्टियाँ बालाघाट, मंडला, शहडोल और सीधी जैसे पूर्वी जिलों में हैं, जहाँ धान मुख्य फसल है। जलोढ़ मिट्टी भिंड, मुरैना और ग्वालियर के चंबल मैदानों में मिलती है, और बुंदेलखंड में मिश्रित लाल-काली मिट्टी है। चंबल के किनारे मृदा अपरदन गंभीर है, जहाँ अवनालिकाओं ने भिंड और मुरैना में उत्खात भूमि (बीहड़) बना दी है।

वन संपदा: मध्यप्रदेश का वन क्षेत्र लंबे समय से भारत के सभी राज्यों में सबसे अधिक रहा है। मध्य और पश्चिमी भाग के शुष्क पर्णपाती वनों में, विशेषकर सतपुड़ा और विंध्य पहाड़ियों में, सागौन प्रमुख है, जबकि पूर्व और दक्षिण-पूर्व में मंडला, बालाघाट और डिंडोरी के आसपास के आर्द्र पर्णपाती वनों में साल प्रमुख है; शुष्क उत्तर-पश्चिम में बबूल और खैर के कँटीले वन हैं। लघु वनोपज, विशेषकर बीड़ी बनाने में प्रयुक्त तेंदूपत्ता, महुआ, चिरौंजी और बाँस, जनजातीय परिवारों का सहारा है। सतपुड़ा के बोरी वन को 1865 में भारत का पहला आरक्षित वन घोषित किया गया। भारतीय वन प्रबंध संस्थान भोपाल में और उष्णकटिबंधीय वन अनुसंधान संस्थान जबलपुर में है।

टाइगर रिज़र्व और राष्ट्रीय उद्यान: 1955 से राष्ट्रीय उद्यान कान्हा (मंडला और बालाघाट) 1973 में प्रोजेक्ट टाइगर के पहले नौ टाइगर रिज़र्व में शामिल था और इसने कठोर भूमि के बारहसिंगा को विलुप्त होने से बचाया। उमरिया का बांधवगढ़, जिसमें प्राचीन पहाड़ी किला है, बाघों के उच्च घनत्व के लिए जाना जाता है। पेंच (सिवनी और छिंदवाड़ा) रुडयार्ड किपलिंग की 'द जंगल बुक' से जुड़ा है। केन तट पर स्थित पन्ना में 2009 तक सभी बाघ समाप्त हो गए थे, और पुनःस्थापना से वहाँ फिर बाघ बसाए गए, जो संरक्षण की सफल कहानी बनी। बोरी और पचमढ़ी सहित सतपुड़ा, सीधी का संजय-दुबरी, शिवपुरी का माधव, भोपाल का वन विहार और डिंडोरी का घुघुआ जीवाश्म उद्यान अन्य संरक्षित क्षेत्र हैं। सफेद बाघ मोहन 1951 में रीवा के जंगलों में पकड़ा गया था, और 2016 में रीवा के पास मुकुंदपुर में सफेद बाघ सफारी खुली।

कूनो, सिंहों की योजना और प्रोजेक्ट चीता: श्योपुर जिले के कूनो राष्ट्रीय उद्यान का नाम चंबल की सहायक कूनो नदी पर पड़ा है। यह 1981 में वन्यजीव अभयारण्य और 2018 में राष्ट्रीय उद्यान बना। इसे गिर के एशियाई सिंहों के दूसरे घर के रूप में चुना गया, ताकि यह प्रजाति केवल एक आबादी पर निर्भर न रहे, और इसके लिए वन क्षेत्र से गाँवों का पुनर्वास किया गया। 2013 में सर्वोच्च न्यायालय ने गिर के कुछ सिंहों को कूनो भेजने का आदेश दिया। इसके बाद कूनो प्रोजेक्ट चीता का घर बना: 17 सितंबर 2022 को नामीबिया से लाए गए आठ चीते यहाँ छोड़े गए और यह प्रजाति भारत लौटी, जहाँ 1952 में इसे विलुप्त घोषित किया गया था; फरवरी 2023 में दूसरा समूह दक्षिण अफ्रीका से आया।

अभयारण्य और जैवमंडल आरक्षित क्षेत्र: राजस्थान और उत्तर प्रदेश के साथ साझा राष्ट्रीय चंबल अभयारण्य घड़ियाल, गंगा डॉल्फ़िन और नदी कछुओं की रक्षा करता है, और केन तथा सोन घड़ियाल अभयारण्य उन नदियों पर यही काम करते हैं। सैलाना (रतलाम) और सरदारपुर (धार) खरमोर (लेसर फ्लोरिकन) के लिए और ग्वालियर के पास घाटीगाँव सोन चिरैया (ग्रेट इंडियन बस्टर्ड) के लिए बनाए गए। सतपुड़ा राष्ट्रीय उद्यान और बोरी तथा पचमढ़ी अभयारण्यों को मिलाकर 1999 में बना पचमढ़ी जैवमंडल आरक्षित क्षेत्र 2009 में यूनेस्को के विश्व जैवमंडल आरक्षित क्षेत्र नेटवर्क में शामिल हुआ। छत्तीसगढ़ के साथ साझा अमरकंटक-अचानकमार (2005) 2012 में और पन्ना (2011) 2020 में इस नेटवर्क में शामिल हुए।

उदाहरण

- वर्षा दक्षिण-पूर्व से उत्तर-पश्चिम की ओर घटती है: सबसे अधिक पचमढ़ी में, सबसे कम भिंड-मुरैना-ग्वालियर क्षेत्र में; पश्चिमी विक्षोभों से होने वाली शीतकालीन वर्षा मावठा कहलाती है।
- मालवा की काली मिट्टी (रेगुर): दक्कन ट्रैप बेसाल्ट से बनी, नमी रोकती है, चूना और पोटाश से समृद्ध, नाइट्रोजन और फॉस्फोरस में कम; सोयाबीन और कपास के लिए आदर्श।
- पूर्व (बालाघाट, मंडला, शहडोल) की लाल-पीली मिट्टी में धान; भिंड-मुरैना में जलोढ़; चंबल के बीहड़ अवनालिका अपरदन का परिणाम हैं।
- लंबे समय से किसी भी राज्य से अधिक वन क्षेत्र मध्यप्रदेश में: मध्य और पश्चिम में सागौन, पूर्व में साल; बोरी (1865) भारत का पहला आरक्षित वन था।
- कान्हा (मंडला, बालाघाट): राष्ट्रीय उद्यान 1955, प्रोजेक्ट टाइगर रिज़र्व 1973, कठोर भूमि के बारहसिंगा का घर।
- बांधवगढ़ (उमरिया), पेंच (सिवनी, छिंदवाड़ा; 'द जंगल बुक'), पन्ना (केन तट; 2009 के बाद बाघ पुनःस्थापित), सतपुड़ा और संजय-दुबरी (सीधी)।
- कूनो (श्योपुर), चंबल की सहायक नदी पर: 1981 में वन्यजीव अभयारण्य, 2018 में राष्ट्रीय उद्यान, गिर के एशियाई सिंहों के दूसरे घर के रूप में तैयार; 17 सितंबर 2022 को नामीबिया से लाए चीते यहाँ छोड़े गए (प्रोजेक्ट चीता)।
- सफेद बाघ मोहन 1951 में रीवा के जंगलों में पकड़ा गया; रीवा के पास मुकुंदपुर में सफेद बाघ सफारी 2016 में खुली।
- जैवमंडल आरक्षित क्षेत्र: पचमढ़ी 1999 (यूनेस्को नेटवर्क 2009), अमरकंटक-अचानकमार 2005 (यूनेस्को 2012), पन्ना 2011 (यूनेस्को 2020)।
- खरमोर (लेसर फ्लोरिकन) अभयारण्य: सैलाना (रतलाम) और सरदारपुर (धार); घड़ियाल: राष्ट्रीय चंबल, केन और सोन अभयारण्य।

> **त्वरित दोहराव:** उष्णकटिबंधीय मानसूनी जलवायु, तीन ऋतुएँ; वर्षा दक्षिण-पूर्व से उत्तर-पश्चिम की ओर घटती है, सबसे अधिक पचमढ़ी, सबसे कम भिंड-ग्वालियर; शीतकालीन वर्षा मावठा; मालवा की काली रेगुर मिट्टी दक्कन बेसाल्ट से, पूर्व में लाल-पीली मिट्टी, चंबल मैदानों में जलोढ़, चंबल के बीहड़; लंबे समय से किसी भी राज्य से अधिक वन क्षेत्र, पश्चिम में सागौन, पूर्व में साल, तेंदूपत्ता; बोरी पहला आरक्षित वन 1865; कान्हा 1955 और प्रोजेक्ट टाइगर 1973, बारहसिंगा; बांधवगढ़, पेंच, पन्ना, सतपुड़ा; कूनो अभयारण्य 1981, राष्ट्रीय उद्यान 2018; पचमढ़ी जैवमंडल 1999, यूनेस्को 2009।

मध्यप्रदेश की कृषि, खनिज और उद्योग

कृषि ऋतुएँ और फसलें: कृषि राज्य का मुख्य व्यवसाय है। मानसून के साथ बोई जाने वाली खरीफ फसलों में सोयाबीन, धान, मक्का, ज्वार, कपास, उड़द और अरहर (तुअर) प्रमुख हैं; वर्षा के बाद बोई जाने वाली रबी फसलों में गेहूँ, चना, मसूर और सरसों प्रमुख हैं। मालवा और नर्मदा घाटी की काली मिट्टी सोयाबीन और गेहूँ के लिए तथा पूर्व की लाल और पीली मिट्टी धान के लिए उपयुक्त है, और चंबल के मैदानों में सरसों तथा गेहूँ उगाए जाते हैं।

प्रमुख फसलें: मध्यप्रदेश को 'सोया राज्य' कहा जाता है, क्योंकि 1970 के दशक से मालवा को केंद्र बनाकर भारत में सोयाबीन की खेती के प्रसार का नेतृत्व इसी ने किया; भारतीय सोयाबीन अनुसंधान संस्थान (ICAR) इंदौर में है। राज्य लंबे समय से दालों, विशेषकर चने, का भारत का अग्रणी उत्पादक रहा है। सीहोर और मालवा क्षेत्र का शरबती गेहूँ पूरे देश में प्रसिद्ध है। निमाड़ (खरगोन और बड़वानी) कपास पट्टी है, बुरहानपुर केले के लिए जाना जाता है, मंदसौर और नीमच में लाइसेंस के अंतर्गत अफीम के साथ ईसबगोल और लहसुन उगाए जाते हैं, और डिंडोरी जैसे जनजातीय जिलों में कोदो और कुटकी जैसे मोटे अनाज उगते हैं। 1964 में स्थापित जबलपुर का जवाहरलाल नेहरू कृषि विश्वविद्यालय राज्य का सबसे पुराना कृषि विश्वविद्यालय है।

हीरा और कोयला: पन्ना जिला आधुनिक भारत में हीरों का मुख्य स्रोत रहा है। हीरे मझगवाँ में किम्बरलाइट पाइप में मिलते हैं, जहाँ राष्ट्रीय खनिज विकास निगम (NMDC) ने यंत्रीकृत खदान स्थापित की, और बजरी तथा कांग्लोमरेट में भी, जिन्हें स्थानीय लोग पट्टे पर खोदते हैं। कोयला गोंडवाना बेसिनों में मिलता है: सिंगरौली, जो नॉर्दर्न कोलफील्ड्स लिमिटेड का मुख्यालय है, सोहागपुर (शहडोल), जोहिला (उमरिया), पेंच-कन्हान (छिंदवाड़ा) और पाथाखेड़ा

(बैतूल)। सिंगरौली का कोयला NTPC के विंध्याचल सुपर थर्मल पावर स्टेशन को मिलता है, और इस क्षेत्र को भारत की ऊर्जा राजधानी कहा जाता है। सतपुड़ा (सारनी) और संजय गांधी (बिरसिंहपुर) अन्य ताप विद्युत केंद्र हैं।

धातुएँ और अन्य खनिज: बालाघाट जिले के मलाजखंड में भारत के सबसे बड़े ताँबा भंडारों में से एक है, जहाँ हिंदुस्तान कॉपर लिमिटेड खुली खदान से खनन करता है। बालाघाट और छिंदवाड़ा में धारवाड़ चट्टानों से मैंगनीज़ निकलता है, जिसका खनन MOIL करता है। कटनी, सतना, रीवा, दमोह और मैहर का चूना पत्थर बड़े सीमेंट उद्योग का आधार है और इसने सतना को सीमेंट नगरी बना दिया है। बॉक्साइट अमरकंटक तथा कटनी, मंडला, बालाघाट और शहडोल में, रॉक फॉस्फेट झाबुआ और सागर में, तथा डोलोमाइट, अग्निसह मृत्तिका, पायरोफिलाइट और डायस्पोर कई जिलों में मिलते हैं। जबलपुर के पास भेड़ाघाट का संगमरमर प्रसिद्ध है।

सार्वजनिक क्षेत्र और सुरक्षा उद्योग: नर्मदापुरम (पूर्व में होशंगाबाद) की सिक्योरिटी पेपर मिल मुद्रा नोटों और अन्य सुरक्षा दस्तावेज़ों के लिए कागज़ बनाती है, और देवास की बैंक नोट प्रेस मुद्रा नोट छापती है। बुरहानपुर जिले के नेपानगर की नेपा मिल्स भारत की पहली अखबारी कागज़ मिल थी। भारत हेवी इलेक्ट्रिकल्स लिमिटेड (भेल) का बड़ा संयंत्र भोपाल में है, और जबलपुर गन कैरिज फैक्ट्री, व्हीकल फैक्ट्री और खमरिया की आयुध निर्माणी के साथ रक्षा उत्पादन का केंद्र है। इंदौर का राजा रामन्ना प्रगत प्रौद्योगिकी केंद्र लेज़र और कण त्वरकों पर कार्य करता है।

औद्योगिक क्षेत्र: इंदौर के पास धार जिले का पीथमपुर अपनी ऑटोमोबाइल इकाइयों के कारण 'भारत का डेट्रॉयट' कहलाता है। भोपाल के पास मंडीदीप और ग्वालियर के पास मालनपुर अन्य औद्योगिक क्षेत्र हैं। इंदौर राज्य की व्यावसायिक राजधानी है, और उज्जैन जिले के नागदा में विस्कोस फाइबर का बड़ा संयंत्र है। भिलाई इस्पात संयंत्र सोवियत सहायता से तब बना था जब दुर्ग मध्यप्रदेश का भाग था, पर 2000 से यह छत्तीसगढ़ में है, इसलिए मध्यप्रदेश से जुड़े प्रश्नों में यह एक भ्रामक विकल्प होता है।

हथकरघा वस्त्र: अशोकनगर जिले के चंदेरी में ज़री किनारी और छोटी बूटियों वाली हल्की रेशम-सूती साड़ियाँ बुनी जाती हैं। नर्मदा तट पर महेश्वर में दोनों ओर से पहनी जा सकने वाली किनारी वाली माहेश्वरी साड़ियाँ बुनी जाती हैं, जिस परंपरा को अहिल्याबाई होलकर ने प्रोत्साहित किया। धार जिले का बाग प्रिंट प्राकृतिक रंगों से हाथ की ठप्पा छपाई है, जिसका नाम बाग गाँव पर पड़ा। उज्जैन के पास भैरवगढ़ बटिक और ठप्पा छपाई के लिए, और भोपाल ज़री-ज़रदोज़ी कढ़ाई तथा मोतियों वाले बटुए के लिए जाना जाता है।

उदाहरण

- मध्यप्रदेश को 'सोया राज्य' कहा जाता है; भारतीय सोयाबीन अनुसंधान संस्थान (ICAR) इंदौर में है।
- मध्यप्रदेश लंबे समय से दालों, विशेषकर चने, के उत्पादन में देश में अग्रणी रहा है; सीहोर का शरबती गेहूँ प्रसिद्ध है।
- फसल पट्टियाँ: निमाड़ में कपास, बुरहानपुर में केला, मंदसौर-नीमच में अफीम और ईसबगोल, डिंडोरी में कोदो-कुटकी।
- पन्ना: आधुनिक भारत में हीरों का मुख्य स्रोत; NMDC ने मझगवाँ के किम्बरलाइट पाइप पर यंत्रीकृत खदान स्थापित की।
- कोयला: सिंगरौली (नॉर्दर्न कोलफील्ड्स मुख्यालय, NTPC विंध्याचल), सोहागपुर (शहडोल), जोहिला (उमरिया), पेंच-कन्हान (छिंदवाड़ा), पाथाखेड़ा (बैतूल)।
- ताँबा: मलाजखंड (बालाघाट), हिंदुस्तान कॉपर लिमिटेड; मैंगनीज़: बालाघाट और छिंदवाड़ा (MOIL)।
- कटनी, सतना, रीवा, मैहर और दमोह का चूना पत्थर सीमेंट उद्योग का आधार है; सतना सीमेंट नगरी है।
- मुद्रा शृंखला: सिक्योरिटी पेपर मिल, नर्मदापुरम (कागज़) और बैंक नोट प्रेस, देवास (छपाई); नेपा मिल्स, नेपानगर भारत की पहली अखबारी कागज़ मिल थी।
- औद्योगिक स्थान: पीथमपुर (भारत का डेट्रॉयट), मंडीदीप, मालनपुर, भेल भोपाल, जबलपुर की आयुध निर्माणियाँ, राजा रामन्ना केंद्र इंदौर।
- वस्त्र: चंदेरी (अशोकनगर), माहेश्वरी (महेश्वर), बाग प्रिंट (धार), भैरवगढ़ बटिक (उज्जैन)। भ्रम: भिलाई इस्पात संयंत्र छत्तीसगढ़ में है।

> **त्वरित दोहराव:** खरीफ: सोयाबीन, धान, मक्का, कपास, उड़द, अरहर; रबी: गेहूँ, चना, मसूर, सरसों; सोया राज्य, सोयाबीन अनुसंधान संस्थान इंदौर में; दालों का अग्रणी उत्पादक; सीहोर का शरबती गेहूँ; पन्ना के हीरे (मझगवाँ, NMDC); सिंगरौली में कोयला (NCL, विंध्याचल), सोहागपुर, पेंच-कन्हान; मलाजखंड ताँबा; बालाघाट मैंगनीज़; सतना सीमेंट; सिक्योरिटी पेपर मिल नर्मदापुरम, बैंक नोट प्रेस देवास, नेपा नेपानगर; भेल भोपाल; पीथमपुर भारत का डेट्रॉयट; चंदेरी, माहेश्वरी, बाग प्रिंट; भिलाई छत्तीसगढ़ में।

मध्यप्रदेश की जनजातियाँ, लोकनृत्य, संगीत, उत्सव और बोलियाँ

जनजातियाँ: मध्यप्रदेश में किसी भी राज्य से अधिक अनुसूचित जनजाति जनसंख्या है: जनगणना 2011 में लगभग 1.53 करोड़ जनजातीय लोग गिने गए, जो राज्य की जनसंख्या का 21.1 प्रतिशत हैं। राज्य और भारत की सबसे बड़ी जनजाति भील मुख्यतः पश्चिमी जिलों झाबुआ, अलीराजपुर, धार, बड़वानी और खरगोन में रहती है। दूसरी सबसे बड़ी जनजाति गोंड मध्य और पूर्वी भाग में मंडला, डिंडोरी, सिवनी, छिंदवाड़ा, बैतूल और शहडोल में रहती है; इसका परधान उपसमूह गायक-कथावाचकों और चित्रकारों का है। मुंडा भाषा बोलने वाले कोरकू सतपुड़ा के बैतूल, हरदा और खंडवा जिलों में, और कोल रीवा, सतना तथा सीधी में रहते हैं।

विशेष रूप से कमज़ोर समूह: राज्य की तीन जनजातियाँ विशेष रूप से कमज़ोर जनजातीय समूहों (PVTG) में सूचीबद्ध हैं। मंडला, डिंडोरी और बालाघाट के बैगा 'बेवर' नामक स्थानांतरित खेती करते थे और गोदना (टैटू) के लिए जाने जाते हैं; डिंडोरी का बैगाचक क्षेत्र उनका मुख्य निवास है। भारिया छिंदवाड़ा की गहरी पातालकोट घाटी में और सहरिया उत्तर-पश्चिम में श्योपुर, शिवपुरी और गुना में रहते हैं।

जनजातीय कला और उत्सव: पशुओं, वृक्षों और देवताओं की आकृतियों को बिंदुओं और रेखाओं से भरने वाली गोंड चित्रकला डिंडोरी जिले के पाटनगढ़ के परधान गोंड कलाकार जनगढ़ सिंह श्याम के माध्यम से प्रसिद्ध हुई, जिन्हें भारत भवन, भोपाल लाया गया था; इस शैली को प्रायः 'जनगढ़ कलम' कहा जाता है। पिथौरा भीलों और भिलालों की अनुष्ठानिक भित्ति चित्रकला है, जिसमें घोड़े और घुड़सवार भरे होते हैं और जो मन्नत पूरी करने के लिए बनाई जाती है।

भगोरिया झाबुआ-अलीराजपुर क्षेत्र का भील उत्सव है, जो होली से पहले के दिनों में साप्ताहिक हाटों के रूप में लगता है और संगीत, नृत्य तथा जीवनसाथी चुनने के लिए प्रसिद्ध है। गोंड और बैगा करमा नृत्य करते हैं, और मड़ई मेले जनजातीय समुदायों को एक साथ लाते हैं।

क्षेत्रवार लोकनृत्य: हर सांस्कृतिक क्षेत्र के अपने नृत्य हैं। बुंदेलखंड में राई नृत्य बेड़नी नर्तकियाँ मृदंग की थाप पर करती हैं, बधाई शुभ अवसरों पर और दिवारी दीपावली के आसपास होता है, तथा वीर आल्हा और ऊदल की गाथा 'आल्हा' वर्षा ऋतु में गाई जाती है। मालवा में महिलाएँ मिट्टी के घड़ों के साथ मटकी नृत्य करती हैं, और माच उज्जैन का लोक संगीत नाट्य है। निमाड़ में गणगौर मुख्य उत्सव और नृत्य है। गोंड करमा और सैला (डंडा नृत्य), कोरकू थापटी, सहरिया लहँगी और बैगा विवाह में परधौनी नृत्य करते हैं।

संगीत: ग्वालियर हिंदुस्तानी संगीत का एक उद्गम स्थल है। राजा मानसिंह तोमर ने ध्रुपद को संरक्षण दिया, और ग्वालियर घराने को ख़याल गायकी का सबसे पुराना घराना माना जाता है। ग्वालियर के पास बेहट में जन्मे और स्वामी हरिदास के शिष्य तानसेन रीवा के राजा रामचंद्र की सेवा के बाद अकबर के दरबार में नवरत्नों में शामिल हुए; ग्वालियर में उनके मकबरे पर हर दिसंबर तानसेन समारोह होता है। उस्ताद अलाउद्दीन खाँ ने मैहर को मैहर घराने का केंद्र बनाया; उनके शिष्यों में रविशंकर, उनके पुत्र अली अकबर खाँ, उनकी पुत्री अन्नपूर्णा देवी, निखिल बनर्जी और पन्नालाल घोष हैं, और उन्होंने मैहर बैंड की स्थापना की। कुमार गंधर्व ने देवास को अपना घर बनाया।

उत्सव और संस्थाएँ: उज्जैन में शिप्रा तट पर सिंहस्थ कुंभ हर बारह वर्ष में तब होता है जब बृहस्पति सिंह राशि में होता है; यह 2004 और 2016 में आयोजित हुआ। हर फरवरी मंदिरों की पृष्ठभूमि में होने वाला खजुराहो नृत्य समारोह 1975 से शास्त्रीय नृत्य प्रस्तुत करता आ रहा है, और उज्जैन का कालिदास समारोह संस्कृत नाटक और कलाओं का उत्सव है। चार्ल्स कोरिया द्वारा डिज़ाइन किया गया बहु-कला केंद्र भारत भवन, भोपाल 1982 में खुला, और भोपाल का इंदिरा गांधी राष्ट्रीय मानव संग्रहालय भारत के समुदायों का जीवन प्रदर्शित करता है।

भाषाएँ और बोलियाँ: हिंदी राजभाषा है। प्रमुख क्षेत्रीय बोलियाँ हैं: मालवा (इंदौर, उज्जैन, रतलाम) में मालवी, निमाड़ (खरगोन, खंडवा, बड़वानी) में निमाड़ी, बुंदेलखंड (सागर, दमोह, टीकमगढ़, छतरपुर) में बुंदेली और बघेलखंड (रीवा, सतना, सीधी) में बघेली। अपनी फागों के लिए प्रसिद्ध ईसुरी बुंदेली के सबसे प्रसिद्ध लोककवि हैं। जनजातीय भाषाओं में भीली और गोंडी बोलने वाले सबसे अधिक हैं, और कोरकू मुंडा परिवार की भाषा है।

उदाहरण

- जनगणना 2011: मध्यप्रदेश में भारत की सबसे अधिक अनुसूचित जनजाति जनसंख्या, लगभग 1.53 करोड़ (राज्य का 21.1 प्रतिशत)।
- भील: सबसे बड़ी जनजाति (झाबुआ, अलीराजपुर, धार, बड़वानी)। गोंड: दूसरी सबसे बड़ी (मंडला, डिंडोरी, सिवनी, छिंदवाड़ा)।
- मध्यप्रदेश के PVTG: बैगा (मंडला, डिंडोरी, बालाघाट), भारिया (पातालकोट, छिंदवाड़ा), सहरिया (श्योपुर, शिवपुरी, गुना)।
- गोंड कला: पाटनगढ़ (डिंडोरी) के जनगढ़ सिंह श्याम, जनगढ़ कलम। पिथौरा: भीलों और भिलालों के घोड़ों वाले अनुष्ठानिक चित्र।
- भगोरिया: झाबुआ-अलीराजपुर क्षेत्र में होली से पहले लगने वाले हाटों का भील उत्सव।
- नृत्य: राई, बधाई, दिवारी (बुंदेलखंड); मटकी (मालवा); गणगौर (निमाड़); करमा, सैला (गोंड); थापटी (कोरकू); लहँगी (सहरिया)।
- तानसेन: ग्वालियर के पास बेहट में जन्म, स्वामी हरिदास के शिष्य, पहले रीवा फिर अकबर के दरबार में; तानसेन समारोह हर दिसंबर ग्वालियर में होता है।
- उस्ताद अलाउद्दीन खाँ ने मैहर को मैहर घराने का केंद्र बनाया; उनके शिष्यों में रविशंकर, अली अकबर खाँ और अन्नपूर्णा देवी हैं।
- उज्जैन में सिंहस्थ हर बारह वर्ष में (बृहस्पति सिंह राशि में), 2004 और 2016 में आयोजित; खजुराहो नृत्य समारोह हर फरवरी; भारत भवन, भोपाल 1982 में खुला।
- बोलियाँ: मालवी (मालवा), निमाड़ी (निमाड़), बुंदेली (बुंदेलखंड; लोककवि ईसुरी), बघेली (रीवा, सतना, सीधी)।

> **त्वरित दोहराव:** सबसे अधिक अनुसूचित जनजाति जनसंख्या, 1.53 करोड़ (21.1 प्रतिशत, जनगणना 2011); भील सबसे बड़ी, गोंड दूसरी; PVTG बैगा, भारिया (पातालकोट), सहरिया; जनगढ़ सिंह श्याम की गोंड कला, भीलों का पिथौरा, होली से पहले भगोरिया; नृत्य राई, बधाई (बुंदेलखंड), मटकी (मालवा), गणगौर (निमाड़), करमा, सैला (गोंड); ग्वालियर घराना ख़याल का सबसे पुराना घराना; बेहट के तानसेन, तानसेन समारोह; अलाउद्दीन खाँ का मैहर घराना; उज्जैन में सिंहस्थ (2004, 2016); खजुराहो नृत्य समारोह; भारत भवन 1982; मालवी, निमाड़ी, बुंदेली, बघेली।

मध्यप्रदेश के स्मारक, तीर्थ स्थल और प्रसिद्ध व्यक्तित्व

विश्व धरोहर स्थल: यूनेस्को ने खजुराहो स्मारक समूह (1986), साँची के बौद्ध स्मारक (1989) और भीमबेटका के शैलाश्रय (2003) को अपनी विश्व धरोहर सूची में शामिल किया है। छतरपुर जिले के खजुराहो मंदिर तीन समूहों में बँटे हैं: कंदरिया महादेव, लक्ष्मण, विश्वनाथ और चित्रगुप्त मंदिरों वाला पश्चिमी समूह, पार्श्वनाथ और आदिनाथ जैसे जैन मंदिरों वाला पूर्वी समूह, और दक्षिणी समूह; चौंसठ योगिनी सबसे पुराना मंदिर है, और ब्रिटिश अधिकारी टी. एस. बर्ट 1838 में इस स्थल को व्यापक ध्यान में लाए। रायसेन जिले के साँची में चार तोरणों वाला महास्तूप, बुद्ध के शिष्यों सारिपुत्र और महामोग्गलान के अवशेषों वाला स्तूप 3, गुप्तकालीन मंदिर 17 और अशोक का स्तंभ है। रायसेन जिले में ही स्थित भीमबेटका प्रागैतिहासिक शैलचित्रों को सँजोए है।

ग्वालियर का किला: गोपाचल पहाड़ी पर स्थित इस किले में अनेक राजवंशों के स्मारक हैं। विशाल तेली का मंदिर प्रतिहार युग का माना जाता है, सास-बहू मंदिर 1093 के हैं, और एक छोटे चतुर्भुज मंदिर में 876 ई. का अभिलेख है, जिसमें शून्य अंक के सबसे पुराने तिथियुक्त प्रयोगों में से एक मिलता है। मानसिंह तोमर का मान मंदिर महल रंगीन टाइलों से सजा है, और उनका गूजरी महल अब पुरातत्व संग्रहालय है। गुरुद्वारा दाता बंदी छोड़ किले की कैद से गुरु हरगोविंद की रिहाई की स्मृति में है। नीचे नगर में मुहम्मद गौस और तानसेन के मकबरे, सिंधियाओं का जय विलास महल और रानी लक्ष्मीबाई की समाधि हैं।

मांडू, ओरछा और महेश्वर: धार जिले में मालवा के सुल्तानों के 'आनंद नगर' मांडू में दो झीलों के बीच जहाज महल, ढलवाँ दीवारों वाला हिंडोला महल, होशंगशाह का संगमरमर का मकबरा, जामा मस्जिद, बाज बहादुर का महल और नर्मदा घाटी की ओर देखता रूपमती मंडप है। बेतवा तट पर ओरछा में राजा

महल, जहाँगीर महल, बुंदेला राजाओं की नदी किनारे की छतरियाँ और राम राजा मंदिर है, जहाँ राम की राजा के रूप में पूजा होती है और उन्हें गार्ड ऑफ ऑनर दिया जाता है। अहिल्याबाई होलकर की राजधानी महेश्वर में नर्मदा तट पर किला और घाट हैं, और इसकी पहचान प्राचीन माहिष्मती से की जाती है।

ज्योतिर्लिंग और तीर्थ स्थल: बारह ज्योतिर्लिंगों में से दो मध्यप्रदेश में हैं। उज्जैन में शिप्रा तट पर महाकालेश्वर दक्षिणमुखी शिवलिंग है, जो भोर की भस्म आरती के लिए प्रसिद्ध है, और ओंकारेश्वर खंडवा जिले में नर्मदा के मांधाता द्वीप पर स्थित है, जिसका आकार ॐ जैसा माना जाता है। अन्य केंद्रों में नर्मदा का उद्गम अमरकंटक; सतना जिले में मंदाकिनी तट पर चित्रकूट, जो राम के वनवास से जुड़ा है और उत्तर प्रदेश के साथ साझा है; मैहर का शारदा देवी मंदिर; दतिया की पीतांबरा पीठ; दतिया के पास सोनागिर की जैन पहाड़ी; और बौद्धों के लिए साँची शामिल हैं।

अन्य दर्शनीय स्थल: पर्यटक भोजपुर के भोजेश्वर मंदिर, उदयगिरि गुफाओं, भेड़ाघाट की संगमरमर चट्टानों, पांडव गुफाओं और बी फॉल वाले पचमढ़ी, सवाई जयसिंह द्वितीय द्वारा उज्जैन में बनवाई गई जंतर-मंतर वेधशाला, इंदौर के राजवाड़ा और लालबाग पैलेस, एशिया की सबसे बड़ी मस्जिदों में से एक भोपाल की ताज-उल-मसाजिद, और बुरहानपुर के पास असीरगढ़ किले को भी देखने जाते हैं।

व्यक्तित्व: आधुनिक भारत के कई निर्माता मध्यप्रदेश में जन्मे। डॉ. बी. आर. आंबेडकर का जन्म 14 अप्रैल 1891 को महू में, चंद्रशेखर आज़ाद का 1906 में भाबरा में और अटल बिहारी वाजपेयी का 25 दिसंबर 1924 को ग्वालियर में हुआ; भारत के नौवें राष्ट्रपति डॉ. शंकरदयाल शर्मा का जन्म 1918 में भोपाल में हुआ। प्रख्यात विधिवेत्ता और दिल्ली विश्वविद्यालय के पहले कुलपति डॉ. हरिसिंह गौर ने 1946 में अपनी निजी बचत से सागर विश्वविद्यालय की स्थापना की। ओशो (रजनीश) का जन्म रायसेन जिले के कुचवाड़ा में हुआ, और उन्होंने जबलपुर में दर्शनशास्त्र पढ़ाया।

लेखक और कलाकार: लता मंगेशकर का जन्म इंदौर में और किशोर कुमार का खंडवा में, दोनों का 1929 में हुआ, और राज्य उनके नाम पर राष्ट्रीय सम्मान देता है। नर्मदापुरम जिले के बाबई में जन्मे माखनलाल चतुर्वेदी को 1955 में 'हिमतरंगिनी' के लिए हिंदी का पहला साहित्य अकादमी पुरस्कार मिला। 'अँधेरे में' के रचयिता गजानन माधव मुक्तिबोध का जन्म श्योपुर में और 'गीत फ़रोश' लिखने वाले भवानी प्रसाद मिश्र का नर्मदापुरम जिले में हुआ। व्यंग्यकार हरिशंकर परसाई का जन्म भी नर्मदापुरम जिले में इटारसी के पास जमानी में हुआ, और उन्हें 1982 में 'विकलांग श्रद्धा का दौर' के लिए साहित्य अकादमी पुरस्कार मिला। भ्रम से बचें: जबलपुर में रहकर कार्य करने वाली सुभद्राकुमारी चौहान का जन्म इलाहाबाद के पास हुआ था, और मैहर के उस्ताद अलाउद्दीन खाँ बंगाल में जन्मे थे।

उदाहरण

- यूनेस्को विश्व धरोहर: खजुराहो स्मारक समूह (1986), साँची के बौद्ध स्मारक (1989), भीमबेटका के शैलाश्रय (2003)।
- खजुराहो (छतरपुर): पश्चिमी, पूर्वी (जैन) और दक्षिणी समूह; कंदरिया महादेव सबसे बड़ा; 1838 में टी. एस. बर्ट इसे व्यापक ध्यान में लाए।
- साँची (रायसेन): चार तोरणों वाला महास्तूप, सारिपुत्र और महामोग्गलान के अवशेषों वाला स्तूप 3, गुप्तकालीन मंदिर 17।
- ग्वालियर किला: तेली का मंदिर, सास-बहू मंदिर (1093), चतुर्भुज मंदिर का शून्य अभिलेख (876 ई.), मान मंदिर, गूजरी महल, गुरुद्वारा दाता बंदी छोड़।
- मांडू (धार): जहाज महल, हिंडोला महल, होशंगशाह का संगमरमर का मकबरा, रूपमती मंडप।
- ओरछा (बेतवा तट): राजा महल, जहाँगीर महल, बुंदेला छतरियाँ और राम राजा मंदिर, जहाँ राम की राजा के रूप में पूजा होती है।
- ज्योतिर्लिंग: महाकालेश्वर (उज्जैन, शिप्रा तट, दक्षिणमुखी, भस्म आरती) और ओंकारेश्वर (नर्मदा में मांधाता द्वीप, खंडवा)।
- जन्मस्थान: आंबेडकर महू (1891), आज़ाद भाबरा (1906), वाजपेयी ग्वालियर (1924), शंकरदयाल शर्मा भोपाल (1918)।
- कला और साहित्य: लता मंगेशकर (इंदौर), किशोर कुमार (खंडवा), माखनलाल चतुर्वेदी (बाबई; हिंदी का पहला साहित्य अकादमी पुरस्कार, 1955), मुक्तिबोध (श्योपुर), हरिशंकर परसाई (जमानी; 'विकलांग श्रद्धा का दौर' के लिए 1982 का साहित्य अकादमी पुरस्कार)।
- भ्रम: सुभद्राकुमारी चौहान का जन्म इलाहाबाद के पास हुआ, पर कार्यक्षेत्र जबलपुर रहा; मैहर के अलाउद्दीन खाँ बंगाल में जन्मे; रानी लक्ष्मीबाई की झाँसी उत्तर प्रदेश में है।

> **त्वरित दोहराव:** यूनेस्को: खजुराहो 1986, साँची 1989, भीमबेटका 2003; खजुराहो के पश्चिमी, पूर्वी (जैन), दक्षिणी समूह, टी. एस. बर्ट 1838; साँची स्तूप 3 में सारिपुत्र के अवशेष; ग्वालियर किला: तेली का मंदिर, सास-बहू 1093, शून्य अभिलेख 876 ई., मान मंदिर; मांडू: जहाज महल, होशंगशाह का मकबरा; ओरछा का राम राजा मंदिर; ज्योतिर्लिंग महाकालेश्वर और ओंकारेश्वर; आंबेडकर महू, आज़ाद भाबरा, वाजपेयी ग्वालियर, शंकरदयाल शर्मा भोपाल; लता इंदौर, किशोर खंडवा; माखनलाल चतुर्वेदी को हिंदी का पहला साहित्य अकादमी पुरस्कार 1955।

मुफ़्त अभ्यास प्रश्न: parikshasaathi.com/hi/q/mp-state-gk/

दोहराव पत्रक

हर पाठ का त्वरित दोहराव एक जगह - परीक्षा से पहले की आख़िरी पढ़ाई के लिए।

मध्य प्रदेश सामान्य ज्ञान	MP गठन 1 नवंबर 1956, प्रथम CM रविशंकर शुक्ल, छत्तीसगढ़ 1 नवंबर 2000 को अलग; विधान सभा 230, लोक सभा 29, राज्य सभा 11, उच्च न्यायालय जबलपुर (खंडपीठ इंदौर, ग्वालियर); नर्मदा अमरकंटक से निकल पश्चिम बहती है, ताप्ती मुलताई से; सर्वोच्च शिखर धूपगढ़ (सतपुड़ा); यूनेस्को: खजुराहो, साँची, भीमबेटका; पन्ना हीरा, मलाजखंड ताँबा, सिंगरौली कोयला; सबसे बड़ा वन क्षेत्र और जनजातीय आबादी (भील सबसे बड़े); राज्य पशु बारहसिंगा, पक्षी दूधराज, वृक्ष बरगद, पुष्प लिली; ज्योतिर्लिंग महाकालेश्वर और ओंकारेश्वर; भोपाल गैस त्रासदी 1984 (मिथाइल आइसोसाइनेट)।
प्राचीन मध्यप्रदेश: भीमबेटका, महाजनपद, मौर्य और गुप्त काल	भीमबेटका (रायसेन) शैलाश्रय, वाकणकर 1957, यूनेस्को 2003; हथनोरा (सीहोर) में नर्मदा मानव खोपड़ी 1982; महाजनपद अवंति (उज्जयिनी, माहिष्मती) और चेदि (शुक्तिमती); अशोक उज्जैन का उपराजा, अभिलेख रूपनाथ, गुर्जरा, सारु-मारु, साँची; विदिशा में शुंग, भरहुत वेदिकाएँ, हेलियोडोरस स्तंभ (दूसरी शताब्दी ईसा पूर्व का उत्तरार्ध); साँची के सातवाहन तोरण; चंद्रगुप्त द्वितीय ने उज्जैन जीता, उदयगिरि वराह फलक (401 ई.); एरण सती अभिलेख 510 ई.; कालिदास, वराहमिहिर और उज्जैन।
मध्यकालीन मध्यप्रदेश: परमार, चंदेल, मालवा के सुल्तान, गोंड और मराठा	ग्वालियर में प्रतिहार (तेली का मंदिर); धार के परमार, राजा भोज (लगभग 1010-1055), भोजपुर मंदिर, भोजशाला; चंदेलों ने खजुराहो बनवाया (लगभग 950-1050), कंदरिया महादेव; त्रिपुरी के कलचुरि, भेड़ाघाट में चौंसठ योगिनी; सास-बहू मंदिर 1093; मानसिंह तोमर का मान मंदिर और गूजरी महल; मालवा सल्तनत 1401, मांडू, बाज बहादुर और रूपमती, सारंगपुर 1561; दुर्गावती का बलिदान 24 जून 1564; ओरछा की स्थापना 1531; असीरगढ़ 1601; दुराहा सराय की संधि 1738; होलकर, सिंधिया, पवार।
आधुनिक मध्यप्रदेश: ब्रिटिश शासन, 1857 की क्रांति और स्वतंत्रता संग्राम	महिदपुर 21 दिसंबर 1817, मंदसौर की संधि 1818; मध्य प्रांत 1861 (नागपुर), बरार 1903 में जुड़ा, सेंट्रल इंडिया एजेंसी इंदौर में; 1857 की क्रांति नीमच में 3 जून से, इंदौर रेजीडेंसी पर हमला 1 जुलाई; शंकरशाह-रघुनाथशाह को 18 सितंबर 1857 को मृत्युदंड; अवंतीबाई का बलिदान 20 मार्च 1858; लक्ष्मीबाई ग्वालियर में 18 जून 1858; तात्या टोपे को शिवपुरी में 18 अप्रैल 1859 को फाँसी; टंट्या भील को 1889 में फाँसी; झंडा सत्याग्रह जबलपुर 1923; जंगल सत्याग्रह 1930; चरण पादुका 1931; त्रिपुरी 1939; आज़ाद का जन्म भाबरा में; भोपाल विलय 1 जून 1949।
मध्यप्रदेश का गठन: 1956 का विलय, विधानमंडल, उच्च न्यायालय और राजकीय प्रतीक	1956 से पहले: पुराना मध्यप्रदेश (भाग 'क', नागपुर), मध्य भारत (भाग 'ख', 28 मई 1948), विंध्य प्रदेश (रीवा), भोपाल (विलय 1 जून 1949); फज़ल अली का राज्य पुनर्गठन आयोग; मध्यप्रदेश का गठन 1 नवंबर 1956, राजधानी भोपाल; पहले राज्यपाल पट्टाभि सीतारमैया, मुख्यमंत्री रविशंकर शुक्ल, अध्यक्ष कुंजीलाल दुबे, मुख्य न्यायाधीश हिदायतुल्ला; छत्तीसगढ़ 1 नवंबर 2000 को अलग; विधानसभा 230 (35 अजा, 47 अजजा), एकसदनीय; लोकसभा 29, राज्यसभा 11; उच्च न्यायालय जबलपुर, खंडपीठ इंदौर और ग्वालियर; MPPSC इंदौर; बारहसिंगा, दूधराज, बरगद, महाशीर, मलखंब।
मध्यप्रदेश का भूगोल: स्थिति, सीमाएँ और भौतिक प्रदेश	मध्यप्रदेश 21°6'-26°30' उ. और 74°9'-82°48' पू. के बीच, भारत का हृदय प्रदेश, कर्क रेखा बीच से; क्षेत्रफल 308,252 वर्ग किमी (9.38 प्रतिशत), राजस्थान के बाद दूसरा; पाँच पड़ोसी, सबसे छोटी सीमा गुजरात; बुंदेलखंड नीस सबसे पुरानी, विंध्य बलुआ पत्थर, गोंडवाना कोयला, मालवा में दक्कन ट्रैप; प्रदेश: मालवा पठार, गिर्द, बुंदेलखंड, विंध्य पठार, बघेलखंड, नर्मदा भ्रंश घाटी, सतपुड़ा-मैकल; सर्वोच्च स्थान धूपगढ़ 1350 मीटर; अमरकंटक में विंध्य और सतपुड़ा का मिलन।
मध्यप्रदेश की नदियाँ, बाँध और झीलें: नर्मदा, ताप्ती, चंबल, बेतवा, सोन	नर्मदा अमरकंटक से, लगभग 1312 किमी (मध्यप्रदेश में 1077 किमी), भ्रंश घाटी से पश्चिम, भरूच में ज्वारनदमुख; भेड़ाघाट में धुआँधार; सबसे लंबी सहायक तवा; न्यायाधिकरण 1969, निर्णय 1979; बरगी, इंदिरा सागर (1000 मेगावाट), ओंकारेश्वर (520 मेगावाट); सरदार सरोवर की 57 प्रतिशत बिजली मध्यप्रदेश को; नर्मदा-क्षिप्रा लिंक 2014; ताप्ती मुलताई से; माही कर्क रेखा को दो बार काटती है; चंबल जानापाव से, गांधी सागर 1960; बेतवा, केन यमुना में; सोन सोनमुड़ा से, बाणसागर; भोज वेटलैंड रामसर 2002।
मध्यप्रदेश की जलवायु, मिट्टियाँ, वन और वन्यजीव	उष्णकटिबंधीय मानसूनी जलवायु, तीन ऋतुएँ; वर्षा दक्षिण-पूर्व से उत्तर-पश्चिम की ओर घटती है, सबसे अधिक पचमढ़ी, सबसे कम भिंड-ग्वालियर; शीतकालीन वर्षा मावठा; मालवा की काली रेगुर मिट्टी दक्कन बेसाल्ट से, पूर्व में लाल-पीली मिट्टी, चंबल मैदानों में जलोढ़, चंबल के बीहड़; लंबे समय से किसी भी राज्य से अधिक वन क्षेत्र, पश्चिम में सागौन, पूर्व में साल, तेंदूपत्ता; बोरी पहला आरक्षित वन 1865; कान्हा 1955 और प्रोजेक्ट टाइगर 1973, बारहसिंगा; बांधवगढ़, पेंच, पन्ना, सतपुड़ा; कूनो अभयारण्य 1981, राष्ट्रीय उद्यान 2018; पचमढ़ी जैवमंडल 1999, यूनेस्को 2009।
मध्यप्रदेश की कृषि, खनिज और उद्योग	खरीफ: सोयाबीन, धान, मक्का, कपास, उड़द, अरहर; रबी: गेहूँ, चना, मसूर, सरसों; सोया राज्य, सोयाबीन अनुसंधान संस्थान इंदौर में; दालों का अग्रणी उत्पादक; सीहोर का शरबती गेहूँ; पन्ना के हीरे (मझगवाँ, NMDC); सिंगरौली में कोयला (NCL, विंध्याचल), सोहागपुर, पेंच-कन्हान; मलाजखंड ताँबा; बालाघाट मैंगनीज़; सतना सीमेंट; सिक्योरिटी पेपर मिल नर्मदापुरम, बैंक नोट प्रेस देवास, नेपा नेपानगर; भेल भोपाल; पीथमपुर भारत का डेट्रॉयट; चंदेरी, माहेश्वरी, बाग प्रिंट; भिलाई छत्तीसगढ़ में।
मध्यप्रदेश की जनजातियाँ, लोकनृत्य, संगीत, उत्सव और बोलियाँ	सबसे अधिक अनुसूचित जनजाति जनसंख्या, 1.53 करोड़ (21.1 प्रतिशत, जनगणना 2011); भील सबसे बड़ी, गोंड दूसरी; PVTG बैगा, भारिया (पातालकोट), सहरिया; जनगढ़ सिंह श्याम की गोंड कला, भीलों का पिथौरा, होली से पहले भगोरिया; नृत्य राई, बधाई (बुंदेलखंड), मटकी (मालवा), गणगौर (निमाड़), करमा, सैला (गोंड); ग्वालियर घराना ख़याल का सबसे पुराना घराना; बेहट के तानसेन, तानसेन समारोह; अलाउद्दीन खाँ का मैहर घराना; उज्जैन में सिंहस्थ (2004, 2016); खजुराहो नृत्य समारोह; भारत भवन 1982; मालवी, निमाड़ी, बुंदेली, बघेली।

मध्यप्रदेश के स्मारक, तीर्थ स्थल और प्रसिद्ध व्यक्तित्व	यूनेस्को: खजुराहो 1986, साँची 1989, भीमबेटका 2003; खजुराहो के पश्चिमी, पूर्वी (जैन), दक्षिणी समूह, टी. एस. बर्ट 1838; साँची स्तूप 3 में सारिपुत्र के अवशेष; ग्वालियर किला: तेली का मंदिर, सास-बहू 1093, शून्य अभिलेख 876 ई., मान मंदिर; मांडू: जहाज महल, होशंगशाह का मकबरा; ओरछा का राम राजा मंदिर; ज्योतिर्लिंग महाकालेश्वर और ओंकारेश्वर; आंबेडकर महू, आज़ाद भाबरा, वाजपेयी ग्वालियर, शंकरदयाल शर्मा भोपाल; लता इंदौर, किशोर खंडवा; माखनलाल चतुर्वेदी को हिंदी का पहला साहित्य अकादमी पुरस्कार 1955।

Pariksha Saathi एक स्वतंत्र परियोजना है और किसी भर्ती संस्था या सरकारी विभाग से संबद्ध नहीं है। हर विषय के नोट्स: parikshasaathi.com/downloads/